वाप्कोस दर्पण

अंक 110

अक्टूबर 2023 - मार्च 2024

संविधान की आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट की गई भाषाएं

1. असमिया	9. पंजाबी	17. नेपाल
2. उड़िया	10. बंगला	18. कोंकणी
3. उर्दु	11. मराठी	19. मैथिली
4. कन्नड़	12. मलयालय	20. संथाली
5. कश्मीरी	13. संस्कृत	21. बोडो
6. गुजराती	14. सिन्धी	22. डोगरी
7. तमिल	15. हिंदी	
8. तेलुगु	16. मणिपुरी	

राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) के अंतर्गत द्विभाषी रूप में जारी किए जाने वाले दस्तावेज

1.	*संकल्प*	**Resolution**
2.	*सामान्य आदेश*	**General Order**
3.	*नियम*	**Rules**
4.	*अधिसूचना*	**Notification**
5.	*प्रेस विज्ञप्तियाँ*	**Press Communique/Releases**
6.	*सरकारी कागज (संसद में प्रस्तुत रिपोर्टों के अलावा)*	**Official Paper (other than reports laid before a House or Houses of Parliament)**
7.	*संविदा*	**Contract**
8.	*करार*	**Agreement**
9.	*अनुज्ञप्तियाँ*	**Licences**
10.	*अनुज्ञा-पत्र*	**Permits**
11.	*सूचना*	**Notice**
12.	*निविदा प्रारूप*	**Forms of Tender**
13.	*विज्ञापन*	**Advertisement**
14.	*संसद में प्रस्तुत की जाने वाली प्रशासनिक और अन्य रिपोर्ट*	**Administrative or other reports laid before a House of Parliament**

वाप्कोस दर्पण

अंक 110

अक्टूबर 2023 - मार्च 2024

संरक्षक
आर. के. अग्रवाल
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

सह-संरक्षक
अनुपम मिश्रा
निदेशक (वाणि. व मा.सं.वि.)
एवं अध्यक्ष, विराकास

मुख्य संपादक
प्रदीप कुमार
वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक
(प्रशा. एवं रा.भा.का.)

संपादक
दलीप कुमार सेठी
उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.)

सहयोग
शारदा रानी
वरिष्ठ सहायक

गौरव राघव
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

(पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने है। संपादन मण्डल का इसके लिए सहमत होना अनिवार्य नही है।)

केवल आन्तरिक वितरण हेतु

	इस अंक में	पृष्ठ संख्या
	संबोधन	1
	संदेश	2
	सम्पादकीय	3
	एक नजर : डेका परियोजना, जिम्बाब्वे	4-6
	अक्टूबर-दिसम्बर, 2023 के दौरान राजभाषा गतिविधियां	7-8
	जनवरी-मार्च, 2024 के दौरान राजभाषा गतिविधियां	9
	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), 2023-24 की दूसरी छमाही बैठक	10
	नराकास गुरूग्राम के तत्वावधान में वाप्कोस लिमिटेड द्वारा राजभाषा निबंध प्रतियोगिता का आयोजन	11
लेख-	राजभाषा के रूप में हिंदी का विकास	12-14
लेख-	वर्तमान जीवन : वास्तविक या आभासी	15-16
पर्यटन-	।। श्री राम जन्मभूमि मंदिर ।। अयोध्या धाम	17-19
लेख-	भारतीय लोकतंत्र और संस्कृति : लोकतंत्र और भाषा	20-21
लेख-	जब हम हिंदी में सोचते हैं तो हिंदी में बोलते क्यूँ नहीं	22
व्यंग लेख-	चन्द्रमा की सच्ची कथा	23-24
यथार्थ लेख-	पर्यावरण प्रदूषण और अम्ल वर्षा	25-27
लेख-	जहाँ है अकाउंट, वहीं से लें क्रेडिट कार्ड उपभोक्ता	28-29
कविता-	सुबह का उपहार	30
लेख-	आदेशों और अवकाशों से मनते राष्ट्रीय पर्व	31-32
लेख-	अपनी शक्ति पहचानिए संचित कीजिए	33-35
लेख-	मनुष्य की तृष्णा का कोई अंत नहीं होता	36
लेख-	स्वप्न विश्लेषण से समझें समस्याएं	37-38
लेख-	प्रेम और अनुमोदन	39-41
लेख-	समय प्रबंधन	42-43

अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक की कलम से

वाप्कोस की गृह पत्रिका "वाप्कोस दर्पण" नियमित रूप से प्रकाशित की जा रही है इसी श्रृंखला में "वाप्कोस दर्पण" के 110वें अंक को आपके सम्मुख रखते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। पत्रिकाओं के माध्यम से न केवल विभिन्न प्रकार की सूचनाएं प्राप्त होती हैं बल्कि यह कार्मिकों के मध्य विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम भी बनती हैं।

हिंदी भाषा हम सभी के हृदय में बसी हुई है इसीलिए कार्यालय के सभी कार्मिक अपने अंदर की सृजनशीलता को जितनी सरलता के साथ राजभाषा हिंदी के माध्यम से अभिव्यक्त कर सकते हैं उतना किसी अन्य भाषा में अभिव्यक्त नहीं कर सकते।

हमें अपने कार्यक्षेत्र में नए संकल्प और लक्ष्य निर्धारित करने होंगे। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हर चुनौती को स्वीकार करना होगा और समर्पित भाव से कार्य करना होगा।

अपनी व्यावसायिक गतिविधियों के साथ-साथ राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भारत सरकार के निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करना हम सभी का संवैधानिक दायित्व है। आर्थिक उदारीकरण और वैश्वीकरण के दौर में हिंदी की महत्वता समय के साथ-साथ बढ़ती जा रही है जो कि एक अच्छा संकेत है। इसलिए हमें राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करते हुए अपने कारोबार को भी नई उंचाईयों पर ले जाना है।

शुभकामनाओं के साथ,

(आर.के.अग्रवाल)
अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक
वाप्कोस लिमिटेड

संदेश

वाप्कोस की गृह पत्रिका "वाप्कोस दर्पण" के 110वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से अपने विचार प्रबुध पाठकों तक पहुंचाते हुए मुझे अत्यन्त खुशी हो रही है। चूंकि हिंदी में प्रत्येक वातावरण के मुताबिक ढलने का लचीलापन मौजूद है इसलिए हमें अपनी भाषा की इसी विशेषता को उजागर करते हुए हिंदी को बाजारवादी-उदारवादी वैश्विक रूप देना होगा।

हिंदी जानने वालों की संख्या और राजनैतिक प्रभावशीलता ने हिंदी को बाजार की भाषा बना दिया है इसलिए हिंदी भाषा को कोई भी स्वदेशी अथवा विदेशी कम्पनी अनदेखा नहीं कर सकती। आज इसी कारण मारीशॅस, फिजी, मेडागास्कर, नेपाल, बांग्लादेश, पाकिस्तान जैसे देशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार तेजी से बढ़ रहा है।

जिस तरह अपने दायित्वों व अधिकारों के प्रति सजग रहना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है, ठीक उसी तरह राजभाषा हिंदी का सम्मान करना भी प्रत्येक भारतीय का दायित्व है। ऐसे में हमें अपने सरकारी कामकाज को भी अधिक से अधिक हिंदी में करना आवश्यक है। हिंदी का सरल व प्रवाहमान स्वरूप ही व्यवहार में सहज लगता है। अत: हमें व्याकरणिक शुद्धता की तरफ ज्यादा ध्यान न देते हुए बोलचाल की भाषा को ही राजकाज की भाषा बनाना है।

इस पत्रिका में समाहित सामग्री पाठक वर्ग का ज्ञानवर्धन करेगी तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए अपनी सार्थकता भी सिद्ध करेगी।

अनुपम मिश्रा

(अनुपम मिश्रा)
निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं
अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति

सम्पादकीय

गृह पत्रिका "वाप्कोस दर्पण" का 110वां अंक (अक्तूबर 2023 से मार्च 2024) आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यन्त खुशी का अनुभव हो रहा है। हिंदी क्षमतावान तथा ऊर्जावान भाषा है जिसमें समय के अनुरूप ढल जाने की अपार विशेषता है। तकनीकी के इस युग में कंप्यूटर पर प्रत्येक वह कार्य हिंदी में किया जा सकता है जो अंग्रेजी में करना संभव है क्योंकि आज हमारे पास हिंदी के तरह-तरह के साफ्टवेयर उपलब्ध है। ऐसे में आत्मविश्वास व लगन के साथ हमें कदम बढ़ाने की आवश्यकता है, सफलता हमारी प्रतीक्षा कर रही है।

संचार माध्यमों के साथ आज हिंदी भाषा बड़ी तेजी से सरलीकरण की तरफ बढ़ रही है। हमें हिंदी में कार्य करने के लिए सरल शब्दों अर्थात आम बोलचाल के शब्दों के प्रयोग पर विशेष ध्यान देते हुए इसे अपने हृदय एवं मन की भाषा बनाना होगा तभी हिंदी का प्रचार-प्रसार हो सकेगा। इसके लिए आप सभी का सहयोग वांछनीय है।

विभागीय पत्रिकाओं की भूमिका हिंदी का प्रयोग बढ़ाने में बहुत अहम होती है जिससे हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए अनुकूल वातावरण बनता है। वाप्कोस दर्पण पत्रिका को अपने पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक व रोचक बनाने के लिए हमने हर संभव प्रयास किया है क्योंकि हमारा मुख्य उद्देश्य यही है कि पत्रिका के माध्यम से अधिक से अधिक लोग हिंदी से जुड़े। आगामी अंकों के लिए आपके बहुमूल्य विचारों और सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

आप सभी राजभाषा के कार्यों से जुड़े रहे, इसी अनुरोध व सदभावना के साथ "वाप्कोस दर्पण" का यह अंक आपके सम्मुख रखता हूं।

प्र० कुमार

(प्रदीप कुमार)
वरि.कार्यकारी निदेशक (प्रशा. व रा.भा.का.)
एवं संपादक "वाप्कोस दर्पण"

एक नजर : डेका परियोजना, जिम्बाब्वे

परियोजना का विस्तृत नाम : डेका पंपिंग स्टेशन का उन्नयन तथा नदी-जल इनटेक प्रणाली, जिम्बाब्वे।
परियोजना का स्वामी : जिम्बाब्वे पावर कंपनी (जेड पी सी), जिम्बाब्वे।
परियोजना का स्थान : ह्वांगे, जिम्बाब्वे।

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस द्वारा परियोजना की प्रगति की समीक्षा

पृष्ठभूमि तथा परियोजना की ज़रूरत :

1) ह्वांगे थर्मल पावर स्टेशन (HTPS - 120 मेगावाट) जिम्बाब्वे का सबसे बड़ा थर्मल पावर स्टेशन है और जिम्बाब्वे में बिजली उद्योग की रीढ़ है क्योंकि यह देश की कुल स्थापित क्षमता का 47% कवर करता है।

2) एचटीपीएस की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए निम्न और उच्च लिफ्ट पंपिंग स्टेशनों की कच्चे जल परिवहन क्षमता में भारी कमी आई है और यह डिज़ाइन की गई क्षमता का लगभग 50% तक कम हो गई है जिनके 2 मुख्य कारण हैं:

- इनटेक चैनलों और गीले सेल नाबदानों में गंभीर गाद जमना।
- निपटान टैंक, वाल्व और पाइपलाइन (42 किमी) के विस्तार जोड़ों से रिसाव।

3) पूरे संयंत्र का उन्नयन बिना किसी देरी के एक आवश्यकता बन गया ताकि जल आपूर्ति प्रणाली की भयावह विफलता को रोका जा सके और बिजली स्टेशन के लिए कच्चे पानी और घरेलू उपयोग के लिए पीने योग्य पानी की आपूर्ति सुनिश्चित की जा सके।

4) पंपिंग स्टेशन के उन्नयन से पावर स्टेशन की विश्वसनीयता भी बढ़ेगी और ह्वांगे टाउनशिप में पानी की आपूर्ति की उपलब्धता और विश्वसनीयता में वृद्धि के साथ ग्रामीण समुदाय के लिए पीने योग्य पानी उपलब्ध कराने की कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारियों को पूरा किया जा सकेगा।

परियोजना की मुख्य विशेषताएं :

1) जल का स्रोत जाम्बेजी नदी है।
2) पानी इनटेक (3500 घन मीटर/घंटा) से ले जाया जाता है।
3) इनटेक से, पानी को निम्न लिफ्ट और उच्च लिफ्ट पंपिंग स्टेशनों के माध्यम से लिया जाता है।
4) उच्च लिफ्ट पंपिंग स्टेशन से, पानी को 960 मिमी व्यास के 42 किलोमीटर के एमएस पाइप के माध्यम से ह्वांगे थर्मल पावर स्टेशन (920 मेगावाट), जिम्बाब्वे तक ले जाया जाता है।

परियोजना के मुख्य लाभ :

1) आर्थिक समर्थक, क्योंकि यह ह्वांगे थर्मल पावर स्टेशन (920 मेगावाट), जिम्बाब्वे द्वारा बिजली उत्पादन के लिए विश्वसनीय जल आपूर्ति प्रदान करेगा।
2) यह डेका स्थानीय समुदाय, जिम्बाब्वे राष्ट्रीय जल प्राधिकरण (जेड आई एन डब्लू ए) और ह्वांगे टाउनशिप को विश्वसनीय कच्चे पानी की आपूर्ति प्रदान करेगा।
3) इससे लगभग 120 से अधिक स्थानीय कर्मचारियों को रोजगार मिलेगा और दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंध बेहतर होंगे।

परियोजना स्थल पर कार्यों का निरीक्षण

परियोजना के कार्य का दायरा (स्कोप) :

1) निविदा अभियांत्रिकी (टेंडर इंजीनियरिंग)
2) इंजीनियरिंग डिज़ाइन और ड्राइंग की समीक्षा
3) सिविल/मैकेनिकल/इलेक्ट्रिकल कार्यों के निर्माण/स्थापना का पर्यवेक्षण
4) उपकरणों का शिपमेंट-पूर्व निरीक्षण
5) इलेक्ट्रिकल और मैकेनिकल कार्यों का निर्माण, परीक्षण और कमीशनिंग
6) दोष दायित्व अवधि (डिफेक्ट लायबिलिटी पीरीयड)

परियोजना की वर्तमान स्थिति

1) पूरी 42 किलोमीटर पाइपलाइन बिछाने का काम पूरा हो गया है और नई पाइपलाइन के माध्यम से पानी बह रहा है।
2) निम्न लिफ्ट और उच्च लिफ्ट पंप और मोटर का निर्माण और निरीक्षण पूरा हो गया है।
3) फील्ड उपकरण का निरीक्षण पूरा हो गया है।
4) वाल्व चैंबरों का निर्माण पूरा हो गया है।
5) कुल 96 प्रतिशत कार्य पूर्ण हो चुका है।

(अनिमेष अग्रवाल)
उप मुख्य अभियंता
तापीय इकाई, शक्ति प्रभाग

अक्टूबर-दिसम्बर, 2023 के दौरान राजभाषा गतिविधियां

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.) गुरुग्राम की वर्ष 2023-24 की दूसरी छमाही बैठक श्री आर.के.अग्रवाल, अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक, वाप्कोस एवं अध्यक्ष, नराकास, गुरुग्राम की अध्यक्षता में दिनांक 27.12.2023 को दोपहर 3.00 बजे गुरुग्राम कार्यालय के समिति कक्ष में आयोजित की गई।

- बैठक में नराकास, गुरुग्राम के सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख या उनके प्रतिनिधि तथा उनके साथ हिन्दी अधिकारी भी उपस्थित थे।

- सबसे पहले श्री प्रदीप कुमार, वरि. कार्यकारी निदेशक (व्य.वि.एवं प्रशा.)/प्रमुख (रा.भा.का.) तथा सदस्य सचिव, नराकास, गुरुग्राम द्वारा बैठक में उपस्थित अध्यक्ष महोदय तथा सभी कार्यालय प्रमुखों/प्रतिनिधियों व राजभाषा अधिकारियों का हार्दिक स्वागत किया गया।

- तत्पश्चात सदस्य सचिव के अनुरोध पर नराकास, गुरुग्राम के अध्यक्ष, श्री आर.के.अग्रवाल, केंद्रीय माल और सेवा कर के आयुक्त (ऑडिट) श्री राजेन्द्र सिंह तथा राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड के उप प्रबन्ध निदेशक, डा. विजय कुमार दोहरे का श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वाणि.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास वाप्कोस से पुष्पगुच्छ देकर हार्दिक स्वागत करवाया गया। इसके बाद श्री प्रदीप कुमार, सदस्य सचिव द्वारा श्री अनुपम मिश्रा का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया गया।

- अध्यक्ष महोदय की अनुमति से सदस्य सचिव, नराकास, गुरुग्राम द्वारा बैठक की विभिन्न मदों पर विधिवत् रूप से चर्चा की गई। बैठक में अध्यक्षीय कार्यालय वाप्कोस लिमिटेड द्वारा सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा हिंदी में किये जा रहे कार्यों की पीपीटी बनाकर दिखाई गई।

- दिनांक 25.12.2023 को वाप्कोस में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस हिंदी कार्यशाला में उपस्थित सभी कार्मिकों को राजभाषा नियमों व अधिनियमों की जानकारी दी गई।

- दिनांक 27.12.2023 को श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में वाप्कोस की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।

- राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा दिनांक 28 दिसम्बर 2023 को क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) जोधपुर, राजस्थान में किया गया। इस सम्मेलन में वाप्कोस लिमिटेड की ओर से श्री दलीप कुमार सेठी, उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.) द्वारा भाग लिया गया।

❖ राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी स्थिति का जायजा लेने हेतु श्री दलीप कुमार सेठी, उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.) द्वारा दिनांक 21.12.2023 को वाप्कोस के प.बं. व अंतराज्यीय जलमार्ग तथा दिनांक 22.12.2023 को बांध व जलाशय प्रभाग के राजभाषाई निरीक्षण किये गए।

❖ संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा दिनांक 09.11.2023 को वाप्कोस के भुवनेश्वर कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण भुवनेश्वर में किया गया। इस निरीक्षण कार्यक्रम में वाप्कोस के निम्नलिखित अधिकारी समिति के समक्ष उपस्थित थे

1. श्री डी.के.मोहन्ती, परियोजना निदेशक, भुवनेश्वर
2. श्री विवेक कुमार त्रिपाठी, उप मुख्य प्रबन्धक, भुवनेश्वर
3. श्री दलीप कुमार सेठी, उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.)

सो जाते हैं फ़ुटपाथ पे अख़बार बिछा कर
मज़दूर कभी नींद की गोली नहीं खाते

मुनव्वर राणा

जनवरी-मार्च, 2024 के दौरान राजभाषा गतिविधियां

- जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की भुवनेश्वर में आयोजित होने वाली बैठक की समीक्षा बैठक आर्थिक सलाहकार एवं राजभाषा प्रभारी की अध्यक्षता में दिनांक 08.02.2024 को जल शक्ति मंत्रालय में आयोजित हुई। इस बैठक में वाप्कोस से श्री प्रदीप कुमार, वरि.कार्यकारी निदेशक (प्रशा. एवं रा.भा.का.) तथा श्री दलीप कुमार सेठी, उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.) द्वारा भाग लिया गया।

- राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी स्थिति का जायजा लेने हेतु श्री दलीप कुमार सेठी, उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.) द्वारा दिनांक 19.03.2024 को वाप्कोस के पुस्तकालय प्रभाग का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

- दिनांक 30.03.2024 को वाप्कोस में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस हिंदी कार्यशाला में उपस्थित सभी कार्मिकों को राजभाषा नियमों व अधिनियमों की जानकारी दी गई।

- दिनांक 30.03.2024 को श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में वाप्कोस की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), वर्ष 2023-24 की दूसरी छमाही बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.), गुरूग्राम की वर्ष 2023-24 की दूसरी अर्धवार्षिक बैठक श्री आर.के.अग्रवाल, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस एवं अध्यक्ष नराकास, गुरूग्राम की अध्यक्षता में दिनांक 27.12.2023 को दोपहर 3.00 बजे वाप्कोस लिमिटेड, गुरूग्राम कार्यालय में आयोजित की गई। बैठक में सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख व उनके प्रतिनिधि, राजभाषा अधिकारी भी उपस्थित थे।

बैठक के प्रारम्भ में, श्री अनुपम मिश्रा जी द्वारा श्री आर.के.अग्रवाल, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस एवं अध्यक्ष, नराकास तथा मंच पर आसीन डा. विजय कुमार दोहरे, उप प्रबंध निदेशक, राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड और श्री राजेन्द्र सिंह, आयुक्त (ऑडिट), केन्द्रीय माल और सेवा कर (ऑडिट) को पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया तथा श्री प्रदीप कुमार, वरि.कार्यकारी निदेशक (व्य.वि.व प्रशा.)/प्रमुख (रा.भा.का.) एवं सदस्य सचिव, नराकास, गुरूग्राम द्वारा श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वाणि. व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया। तत्पश्चात् अध्यक्ष महोदय ने बैठक में उपस्थित सभी कार्यालय प्रमुखों/प्रतिनिधियों व राजभाषा अधिकारियों का आभार व्यक्त किया।

तत्पश्चात अध्यक्ष महोदय की अनुमति से सदस्य सचिव, नराकास, गुरुग्राम द्वारा बैठक की विभिन्न मदों पर विधिवत् रूप से चर्चा की गई।

बैठक के दौरान ही नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), गुरुग्राम की वर्ष 2022-23 की वार्षिक पत्रिका "राजभाषा अनुराग" का विमोचन अध्यक्ष, नराकास, गुरुग्राम द्वारा किया गया।

बैठक में अध्यक्षीय कार्यालय वाप्कोस लिमिटेड द्वारा सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा हिंदी में किये जा रहे कार्यों की पीपीटी बनाकर दिखाई गई।

इस अवसर पर डा. विजय कुमार दोहरे, उप प्रबंध निदेशक, राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड और श्री राजेन्द्र सिंह, आयुक्त (ऑडिट), केन्द्रीय माल और सेवा कर (ऑडिट) ने भी हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने के संबंध में अपने विचार व्यक्त किए।

सदस्य सचिव द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक का समापन किया गया।

नकारास गुरुग्राम के तत्वावधान में वाप्कोस लिमिटेड द्वारा राजभाषा निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुरुग्राम के तत्वावधान में वाप्कोस द्वारा दिनांक 28.06.2023 को 'निबंध प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया जिसमें नराकास, गुरुग्राम के विभिन्न सदस्य कार्यालयों के प्रतिभागियों ने भाग लिया।

श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.) एवं सदस्य सचिव नराकास, गुरुग्राम ने प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन भी किया। प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा:-

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम व पदनाम	कार्यालय का नाम	स्थान	राशि
1.	श्री प्रियांशु श्रीवास्तव, सहायक अभियंता	राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम	प्रथम	2500/-
2.	सुश्री नीलम अग्रवाल, प्रवक्ता भौतिकी विज्ञान	केन्द्रीय विद्यालय, क्रमांक-1, सेक्टर-14 गुड़गांव	द्वितीय	2000/-
3.	श्री साहिल, राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक	नेहरू युवा केन्द्र	तृतीय	1500/-
4.	श्री श्वेताभ त्रिपाठी, वरि.अभियंता	वाप्कोस लिमिटेड	सांत्वना	1000/-
5.	सुश्री नुपुर चतुर्वेदी, सहायक प्रबन्धक	पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड	सांत्वना	1000/-

राजभाषा के रूप में हिंदी का विकास

सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए 1976 में राजभाषा नियम बनाया गया था जो कि एक महत्वपूर्ण कदम था, इससे हिन्दी के प्रयोग में काफ़ी सहायता मिली है। इस नियम की वर्तमान में महत्वपूर्ण व्यवस्थाएं इस प्रकार है:

केंद्र सरकार के कार्यालयों के 'क' क्षेत्र के लिए राज्य व संघ राज्य क्षेत्र (बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य, छत्तीसगढ़, उत्तरांचल, झारखण्ड) को ऐसे राज्यों में स्थित किसी अन्य कार्यालय या व्यक्ति को भेजे जाने वाले पत्र आदि हिन्दी में भेजे जाएंगे। यदि किसी ख़ास मामलें में कोई पत्र अंग्रेजी में भेजा जाता है तो उसका हिन्दी अनुवाद भी साथ भेजा जाएगा।

केंद्र सरकार के कार्यालयों से 'ख' क्षेत्र के किसी राज्य व संघ राज्य क्षेत्र (पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र और चंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र) के प्रशासनों को भेजे जाने वाले पत्र आदि सामान्यतः हिन्दी में भेजे जाएंगे। यदि ऐसा कोई पत्र अंग्रेजी में भेजा जाता है तो उसका हिन्दी अनुवाद साथ भेजा जाएगा। इन राज्यों में रहने वाले किसी व्यक्ति को भेजे जाने वाले पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी, किसी भी मात्रा में हो सकते हैं।

केंद्रीय सरकार के कार्यालयों से 'ग' क्षेत्र के किसी राज्य व संघ राज्य क्षेत्र ('क' और 'ख' क्षेत्र में शामिल न होने वाले सभी राज्य और संघ राज्य क्षेत्र) के किसी कार्यालय या व्यक्ति को पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाएंगे। यदि ऐसा कोई पत्र हिन्दी में भेजा जाता है तो उसका अंग्रेजी अनुवाद साथ भेजा जाएगा।

केंद्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग और दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्र व्यवहार हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकता है किंतु केंद्र सरकार के किसी मंत्रालय/विभाग और 'क' क्षेत्र में स्थिति संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों के बीच होने वाला पत्र व्यवहार सरकार द्वारा निर्धारित अनुपात में हिन्दी में होगा।

हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर अनिवार्य रूप से हिन्दी में ही दिए जाएंगे। हिन्दी में लेख या हिन्दी में हस्ताक्षर किए गए आवेदनों या अभ्यावेदनों के उत्तर भी हिन्दी में दिए जाएंगे।

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं का प्रयोग किया जाएगा और इसे सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्ति की होगी।

केंद्रीय सरकार का कोई कर्मचारी फाइलों में हिन्दी या अंग्रेजी में टिप्पणी या मसौदे लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में भी प्रस्तुत करें।

केंद्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और अन्य प्रक्रिया साहित्य हिन्दी और अंग्रेजी, दोनों में द्विभाषिक रूप में तैयार और प्रकाशित किए जाएंगे। सभी फार्मों और रजिस्टरों के शीर्ष, नामपट्ट, स्टेशनरी आदि की अन्य मदें भी हिन्दी और अंग्रेजी मे द्विभाषिक रूप में होनी चाहिए।

प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह दायित्व होगा कि वह राजभाषा अधिनियम और उसके अधीन बने नियमों का समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित करें।

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों पर है। इस नीति के समन्वय का कार्य राजभाषा विभाग करता है। यह विभाग समन्वय के लिए वार्षिक कार्यक्रम को जारी करने के अलावा कई प्रकार की समितियों का गठन करके यह कार्य कर रहा है, जिनका विवरण इस प्रकार हैः

केंद्रीय हिन्दी समिति: हिन्दी के विकास और प्रसार तथा सरकारी कामकाज में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग के संबंध में भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों द्वारा कार्यान्वित किए जा रहे कार्यक्रमों का समन्वय करने और नीति संबंधी दिशा-निर्देश देने वाली यह सर्वोच्च समिति है जिसके अध्यक्ष प्रधानमंत्री होते हैं।

हिन्दी सलाहकार समिति: सरकार के निर्णय के अनुसार राजभाषा नीति का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने और इस संबंध में आवश्यक सलाह देने के लिए जनता के साथ अधिक संपर्क में आने वाले विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों में हिन्दी सलाहकार समितियां गठित की गई हैं। इस निर्णय के अनुसार कई मंत्रालयों में उनके मंत्रियों की अध्यक्षता में हिन्दी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है। इन समितियों में संसद सदस्य तथा हिन्दी के विशिष्ट विद्वानों के अतिरिक्त मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी शामिल होते हैं जो अपने मंत्रालय में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए आवश्यक विचार-विमर्श करके निर्णय लेते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति: केंद्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों की संख्या (चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को छोड़कर) 25 या इससे अधिक है, वहाँ राजभाषा कार्यान्वयन समितियां बनाई गई हैं।

केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति: मंत्रालयों व विभागों की राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के अध्यक्षों को मिला कर एक केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति बनाई गई है, जो उनकी समस्याओं पर आंतरिक रूप से विचार करके उनका समाधान ढूँढती है।

संसदीय राजभाषा समिति: यह एक उच्चाधिकार प्राप्त संसदीय राजभाषा समिति है जो संघ के सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग में की गई प्रगति की समीक्षा करती है। इसमें 30 संसद सदस्य (20 लोक सभा से और 10 राज्य सभा से) होते हैं।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति: 1976 में लिए गए एक निर्णय के अनुसार ऐसे कई नगरों में जहाँ 10 या इससे अधिक केंद्रीय कार्यालय है, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। इन समितियों के गठन का प्रमुख उद्देश्य केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/ उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की समीक्षा करना, इसे बढ़ावा देना और इसके मार्ग में आई कठिनाइयों को दूर करना है।

उपरोक्त प्रयासों के फलस्वरूप भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ा है। इसी प्रकार उनके अधीनस्थ कार्यालयों में भी हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है। राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अनुसार निम्नलिखित कागजपत्रों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग अनिवार्य है:- संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें, प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें, सरकारी कागजपत्र, संविदाएं, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञापत्र, टेंडर नोटिस, टेंडर फार्म। अधिकतर मंत्रालय/विभाग/उपक्रम धारा 3(3) का अनुपालन कर रहे हैं और हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर भी हिन्दी में दे रहे हैं।

इस तरह राजभाषा के रूप में हिन्दी के विकास, प्रचार और प्रयोग में काफी वृद्धि हुई है, परन्तु हम अभी भी निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सके हैं क्योंकि जो सरकारी कर्मचारी हिन्दी जानते हैं, वे भी द्विभाषिक रूप में कार्य करने की छूट होने के कारण हिन्दी के बजाय अंग्रेजी में काम करना ज्यादा पसंद करते हैं, क्योंकि एक तो वे पहले से अंग्रेजी में काम करने के आदि रहे हैं, दूसरे हिन्दी में काम करने में संकोच करते हैं। कर्मचारियों की इसी हीनता और संकोच की भावना सरकारी कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के मार्ग में बहुत बड़ी बाधा है। कर्मचारियों की हीन भावना और हिंदी में काम करने की झिझक को दूर करने के लिए लगभग सभी कार्यालयों द्वारा हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी का प्रयोग करने के लिए पहले जितने यांत्रिक साधन और सुविधाएं उपलब्ध थी, वे हिन्दी में सुलभ नहीं थी जिसकी वजह से विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी का प्रयोग अपेक्षित रूप में नहीं हो पा रहा था, परन्तु अब हिंदी में काम करने की पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध हैं जिनकी मदद से हम आसानी से हिंदी में काम कर सकते हैं। हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा उपयुक्त वातावरण न होने की है। प्रायः अधिकतर कर्मचारी हिंदी का काम करने की जिम्मेदारी दूसरों पर डाल देते हैं। इसके बावजूद विविध प्रयासों के परिणामस्वरूप हिन्दी का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है।

भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों द्वारा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के वार्षिक कार्यक्रम में दिये गए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के भरसक प्रयास किये जा रहे हैं। हिन्दी में सर्वाधिक काम करने वाले मंत्रालयों व विभागों को शील्डें देने की व्यवस्था की गई है। राजभाषा विभाग अपने विभिन्न प्रकाशनों के माध्यम से राजभाषा नीति, राजभाषा अधिनियम तथा राजभाषा नियमों की जानकारी देने का पूरा प्रयास कर रहा है। विभिन्न मंत्रालयों की हिन्दी सलाहकार समितियां तथा राजभाषा कार्यान्वयन समितियां हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए आवश्यक कदम उठा रही है। हिन्दी कार्यशालाओं के आयोजन से भी कर्मचारियों की झिझक दूर करके उन्हें हिन्दी में काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। कार्यालयों में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। सभी सरकारी कार्यालयों द्वारा हिन्दी में अधिक से अधिक काम करने का वातावरण बनाने के हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। हमारी मंजिल कुछ दूर अवश्य है, किंतु आशा है कि आप सभी के सहयोग से हम शीघ्र ही अपनी मंजिल अर्थात् लक्ष्य तक अवश्य पहुंचेंगे।

(दलीप कुमार सेठी)
उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.)

वर्तमान जीवन : वास्तविक या आभासी

कम्प्युटर नामक मशीन को 90 के दशक में जब भारतवर्ष में लाया गया, तो जनसाधारण के लिए यह किसी उनसुलझी पहेली से ज्यादा नहीं था। इससे पहले टाइपराइटर की बड़ी पूछ थी। टाइपिस्ट होना अपने आप में एक बड़ी काबलियत थी। टाइपराइटर के एक ही फॉन्ट-स्टाइल में टाइप किए हुए शब्द अपना ही एक व्यवहारिक महत्व रखते थे। पर जैसे ही कम्प्युटर ने भारत में अपने कदम रखे दस्तावेजों के निर्माण के कई मशीनी व गैर-मशीनी तौर-तरीकों को पीछे धकेलने का काम शुरू हो गया। धीरे-धीरे यह मशीन पूरी तरह से व्यवसाय में प्रयुक्त हो गयी।

पर उस दौर में कौन यह कल्पना कर पाया होगा कि एक दिन इस मशीन की सहायता से हम लोग कपड़े, जूते और यहाँ तक कि ख़ाना भी मँगा सकेंगे। कम्प्युटर का निर्माण मुख्य तौर पर गणना या दस्तावेज़ निर्माण के लिए करवाया गया होगा ऐसा आकलन किया जा सकता है।। यह शुरुआती दौर में कैल्कुलेटर+टाइपराइटर का एक बेहतर विकल्प भर रहा होगा। लेकिन सूचना-तकनीक ने इसके साथ जुड़कर पूरी दुनिया को ही बदल डाला।

हम सभी जिस दुनिया में सांस लेते हैं और जो सब कुछ दृश्य है या हमारी पांचों इंद्रियों द्वारा मान्य है, उसे हम वास्तविकता कहते हैं। वास्तविकता ने एक समाज को विकसित किया, व्यवहार, रिश्ते-नाते और लेन-देन के लिए बाज़ार विकसित किए। वास्तविक समाज़ में सब कुछ प्रत्यक्ष होता है। वास्तविकता जो दृश्य है। जिसे हम उसके वास्तविक रूप में सुन और छु सकते हैं। वास्तविकता ईश्वर प्रदत एक प्राकृतिक दुनिया है जिसके विकास के लिए मानवीय व्यवहार और आपसी रिश्तों का ताना-बाना बुना जाता है।

लेकिन सॉफ्टवेर इंजीन्यरिंग की नयी-नयी खोजों ने हमें एक आभासी दुनिया में पहुंचा दिया है। पहले मनोरंजन व्यवसाय फिर सोशल मीडिया, ऑनलाइन टैक्सी और अब तो एक आभासी बाज़ार भी पूरी तरह से विकसित कर दिया गया है। आभासी बाज़ार जिसके परिणाम वास्तविक हैं, खरीददारी वास्तविक है लेकिन हमारे समक्ष वह वास्तविक रूप में दृश्य नहीं हैं। जिसे हम उसके वास्तविक रूप में सुन और छु सकते नहीं हैं। दुनिया भर के खुदरा व्यवसायी इस व्यवस्था से तंग हैं। कुछ को व्यवसाय बदलने पड़ गये और कुछ ने अपने आप को इस नयी व्यवस्था में भागीदारी कर अपने आप को हालात में ढाल लिया है।

कभी सपनों और कल्पनाओं में एक आभासी दुनिया हुआ करती थी लेकिन अब वास्तविक समाज में एक आभासी दुनिया है। वह आभासी दुनिया जो आभास मात्र से ही विश्व व्यापार की धुरी बन चुकी है। जिसके बिना अब व्यापार की कल्पना करना अत्यंत कठिन है और वह आभासी दुनिया जिसने इतनी बड़ी दुनिया को एक आम आदमी की पहुँच में ला खड़ा किया है। विश्व व्यापार की परिकल्पना और सीमितता को इस आभासी तकनीक के आधार पर काफी विस्तार दिया जा चुका है और अधिक विस्तार के लिए तकनीकी प्रयास जारी हैं।

निश्चित तौर पर मानव स्वभाव किसी भी नयी तकनीक या सुविधा को सकारात्मक व नकारात्मक, दोनों ही रूप में स्वीकारता है। सुविधा बढ़ती है तो अपराध भी बढ़तें और आलस्य भी। जहाँ कुछ लोग सुविधा का प्रयोग कर अपना व्यक्तिगत विकास सुदृढ़ करते हैं तो कुछ लोग उसमें अपराध की नयी राह ख़ोज लेते हैं। एक बीच का वर्ग भी है जो किसी सुविधा का प्रयोग अपनी दिनचर्या और शरीर को अव्यवस्थित करने में करते हैं। सूचना तकनीक से उपजी यह आभासी दुनिया भी इन सभी बातों से अनभिज्ञ नहीं है।

मनुष्य ने विज्ञान का प्रयोग कर कालांतर की लगभग हर कल्पना को एक मूर्त रूप दिया है। चाहे वह कल्पना का हूबहू रूपान्तरण न कर पाया हो लेकिन काफी हद तक सफल भी रहा है। कल्पना जब वास्तविक रूप में अस्तित्व में आ जाती है तो उसका आकर्षण शनैः-शनैः समाप्त हो जाता है। एक समय बाद वह हमारी दुनिया का हिस्सा हो जाती है और मनुष्य फिर से नयी कल्पनाओं पर शोध कार्य आरंभ कर देता है। हो सकता है आने वाला कल हमें एलियन्स और दूसरी दुनियाओं के दर्शन भी करा दे।

मनुष्य की इच्छाओं की तरह मनुष्य की कल्पनाओं का भी कोई अंत नहीं। कल्पना हमेशा सुंदर लगती है, आकर्षित करती है। वास्तविकता अक्सर उदासीनता की तरफ ले जाती है। लेकिन जो संतुष्टि वास्तविकता दे सकती है वह कभी आभासी दुनिया से प्राप्त नहीं हो पाती। कितने ही मनोरंजन के साधन हो जाएँ, कितनी ही नयी आभासी कल्पनाएँ सार्थक हो जाएँ लेकिन मनुष्य अभी तक समाज़ व मानवीय रिश्तों के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर पाया है। जीवन जीने के लिए अपने जैसे लोगों का आस-पास होना सदैव एक मूलभूत आवश्यकता बनी ही हुई है। आभासी दुनिया ने जीवन को बदला तो है लेकिन मनुष्य ने अक्सर इन सुविधाओं को अपनी वास्तविक दुनिया को और सुदृढ़ करने हेतु ही इस्तेमाल किया है। वर्तमान समय तक तो यही प्रतीत होता है कि आभासी दुनिया जीवन में आकर्षण और सुविधा के स्तर को बनाए रखेगी और वास्तविकता जीवन को।

विमल किशोर
सहायक आरेखण अधिकारी
जल संसाधन विभाग

साथी सब कुछ सहना होगा !

मानव पर जगती का शासन,
जगती पर संसृति का बंधन,
संसृति को भी और किसी के प्रतिबंधों में रहना होगा !
साथी, सब कुछ सहना होगा !

हम क्या है जगती के सर में !
जगती क्या, संसृति सागर में !
एक प्रबल धारा में हमको लघु तिनके-सा बहना होगा !
साथी सब कुछ सहना होगा !

हरिवंश राय बच्चन

॥ श्री राम जन्मभूमि मंदिर ॥
अयोध्या धाम

अयोध्या धाम में प्रभु श्री राम का मंदिर प्राचीन नागर शैली मैं बनाया गया है। इस नागर शैली की प्रमुखता इस प्रकार है।

नागर शैली मंदिर का मूल रूप:

1. गर्भगृह:

इसका शाब्दिक अर्थ है 'गर्भगृह' और यह गुफा जैसा गर्भगृह होता है। गर्भगृह को मुख्य देवता के आवास के लिए बनाया गया है, जो स्वयं बहुत अधिक अनुष्ठानों का केंद्र है।

2. मंडप:

यह मंदिर का प्रवेश द्वार होता है। यह सभा मंडप या स्तंभित (नियमित अंतराल पर स्तंभों की श्रृंखला) हॉल हो सकता है जिसमें बड़ी संख्या में उपासकों के लिए जगह होती है। यहाँ भजन, नृत्य और इस तरह के अन्य कार्यक्रमों का अभ्यास किया जाता है।

कुछ मंदिरों में अर्धमंडप, मंडप और महामंडप के नाम से विभिन्न आकारों में कई मंडप हैं।

3. मंदिर शिखर या विमान :

वे एक स्वतंत्र मंदिर के पर्वत-समान शिखर होते हैं। शिखर उत्तर भारतीय मंदिरों में पाया जाता है और विमान दक्षिण भारतीय मंदिरों में पाया जाता है। शिखर की घुमावदार आकृति है, जबकि विमान में पिरामिड जैसी संरचना है।

4. आमलका:

यह मंदिर के शीर्ष पर एक पत्थर की डिस्क जैसी संरचना है और ये उत्तर भारतीय मंदिरों में आम हैं।

5. कलश :

यह मंदिर का सबसे ऊंचा स्थान है और आमतौर पर उत्तर भारतीय मंदिरों में देखा जाता है।

6. अंतराल

अंतराल गर्भगृह और मंदिर के मुख्य हॉल (मंडप) के बीच का एक संक्रमण क्षेत्र है।

7. जगति:

यह बैठने और प्रार्थना करने के लिए एक उठा हुआ मंच है और उत्तर भारतीय मंदिरों में आम है।

8. वाहना:

यह एक मानक स्तंभ या ध्वज के साथ मंदिर के मुख्य देवता का पर्वत या वाहन है जिसे गर्भगृह से पहले अक्षीय रूप से रखा जाता है।

नागर शैली भारतीय मंदिर की वास्तुकला:

- ❖ यहाँ एक पत्थर के चबूतरे पर एक पूरा मंदिर बनाना आम बात है जिसके ऊपर सीढ़ियाँ चढ़ती हैं
- ❖ प्राचीनतम मंदिरों में केवल एक शिखर था, लेकिन बाद के काल में कई शिखर आए
- ❖ गर्भगृह हमेशा सबसे ऊंची मीनार के नीचे स्थित होता है।

श्री राम जन्मभूमि मंदिर, अयोध्या धाम की कुछ विशेषताएं:

1.	कुल क्षेत्रफल	2.7 एकड़
2.	कुल निर्मित क्षेत्र	57400 वर्ग फ़ुट
3.	मंदिर की लंबाई	360 फीट
4.	मंदिर की चौड़ाई	235 फीट
5.	शिखर सहित कुल ऊंचाई	161 फीट
6.	मंजिल की कुल संख्या	3
7.	प्रत्येक मंजिल की ऊंचाई	20 फीट
8.	भूतल पर स्तंभों की संख्या	160
9.	प्रथम तल पर कॉलम की संख्या	132
10	दूसरी मंजिल पर कॉलम की संख्या	74
11.	मंडपों की कुल संख्या	5 मंडप
12.	द्वारों की कुल संख्या	12 द्वार

यह मंदिर वास्तु शास्त्र को ध्यान में रखते हुए बनाया गया है। जिसमे मंदिर का प्रवेश द्वार पूर्व दिशा में हैं, जिसको सिंह द्वार का नाम दिया गया है। सभी भक्त सिंह द्वार से प्रवेश करते हुए 32 सीढ़ियों को चढ़ के मंदिर मैं प्रवेश करते हैं। बुजुर्ग भक्तो के लिए भी प्रयाप्त इंतज़ाम की व्यवस्था की गई है। पुरे मंदिर परिसर को परकोटा मार्ग से घेरा गया है। जिसका मुख्य उदेश्ये भक्तो को मंदिर की परिक्रमा एवं मंदिर परिसर की सुरक्षा दोनों ही कामो मैं उपयुक्त तरीके से इसी परकोटा मार्ग मैं 6 अन्य मंदिरो की स्थापना किया गया है। मंदिर के उत्तर मैं जहाँ पहले सीता रसोई हुआ करती थी, वहां अब माँ अन्नपूर्णा का मंदिर है। जहाँ पर मंदिर परिसर का भोजन एवं प्रसाद इत्यादि बनेगा। मंदिर के दक्षिण में भगवान् श्री हनुमान जी का मंदिर है। साथ ही मंदिर की चारो दिशाओं में भगवान गणपति, भगवान सूर्य देव, भगवान शिव और माँ भगवती का मंदिर भी है। इसके अतिरिक्त एक स्तम्भ (कुबेर टीला) मुख्य मंदिर के सामने बनाया गया है जिसपे जटायु प्रभु की प्रतिमा भी रखी गई है। इन सबके अलावा परकोटा मार्ग के बाहर कई अन्य व्यक्तिविशेष के मंदिर भी बनाये गये है, जिनका प्रभाव प्रभु श्री राम की जीवन मैं बहुत अधिक है। उदाहरण के लिए महर्षि वाल्मीकि, महर्षि अगस्त्य, महर्षि वशिष्ठ, महर्षि विश्वामित्रत, निषाद राज, माता सबरी और देवी अहिल्या।

मंदिर के भूतल पर स्तिथ गर्भ गृह में प्रभु श्री राम का विग्रह है। इस विग्रह में प्रभु श्री राम एक 5 वर्षीय बालक के रुप मैं है, जिन्होंने धनुष भी हाथ मैं लिया है, इसकी कुल ऊंचाई 8 फ़ीट (52 इंच) है, जिसे ही राम लल्ला नाम से सम्बोदित किया जाता है। गर्भ ग्रह मैं प्रभु श्री राम की दो मूर्तियां हैं। एक मूर्ती को अचल मूर्ती कहा जाता हैं, जो हमेशा मंदिर परिसर मैं विराजमान रहती हैं और दूसरी मूर्ती उत्सव मूर्ती के नाम से जनि जाएगी, जिसका प्रयोग मंदिर परिसर के बाहर शोभा यात्रा इत्यादि में मंदिर के गर्भ ग्रह से बाहर निकल कर भक्तो के दर्शन के लिए लायी जाएगी। मंदिर के प्रथम स्थल पे श्री राम दरबार है।

मंदिर परिसर में कुल 5 मंडप है जो इस प्रकार है :

1. कुरु मंडप
2. नृत्य मंडप
3. सभा मंडप
4. प्रार्थना मंडप
5. कीर्तन मंडप

इस मंदिर की नीव 50 फ़ीट गहरी आरसीसी की लेयर से बनी है। जो इस मंदिर को आर्टिफीसियल रॉक जैसी मजबूती प्रदान करती है। मंदिर को ज़मीन की नमी से बचाने के लिए ग्रेनाइट की 21 फुट ऊँची प्लिंथ का निर्माण किया गया है। मंदिर परिसर मैं जल प्रशोधन संयंत्र, मलजल प्रबंद, अग्नि सुरक्षा के लिए जल आपूर्ति एवं स्वतंत्र पावर स्टेशन भी है। इसी के साथ इस मंदिर एक और विशेषता यह भी है की इस मंदिर के निर्माण मैं किसी भी प्रकार के लोहे का इस्तेमाल नहीं किया गया है। यह मंदिर केवल पत्थर और ताम्बे के उपयोग से ही निर्मित हुआ है।

मंदिर परिसर में 2100 किलो ग्राम का घंटा भी लगाया गया है जिसकी कुल कीमत 10 लाख है। इसी के साथ रामेश्वरम से एक और घंटा लाया गया है जिसका कुल वजन 613 किलो ग्राम है और इस घंटे की ये विशेषता है की इसकी ध्वनि 10 किलो मीटर दूर तक सुनाई देगी।

इस मंदिर का क्षेत्रफल 70 एकड़ है, जिसमे से 70% प्रतिशत क्षेत्रफल ग्रीन एरिया में आएगा। मंदिर मैं लोहे का प्रयोग न होने की वजह से इस मंदिर परिसर की आयु लगभग 1000 वर्ष से भी ज्यादा की होगी।

-चक्षु राजा

कनिष्ठ सहायक (वित्त)

भारतीय लोकतंत्र और संस्कृति : लोकतंत्र और भाषा

साभार : विश्व भाषा हिन्दी संस्कृति और समाज

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमने अपने देश में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को स्वीकार किया है। लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था का अर्थ यह होता है कि हमारे देश की जनता के चुने गए लोग देश में कानून और व्यवस्था का संचालन करें। यह शासन-व्यवस्था जनता के द्वारा स्थापित होती है और जनता के हित के लिए कार्य करती है।

हमारे देशवासियों की प्रकृति के अनुसार और उनके ऐतिहासिक विकास को दृष्टि में रखते हुए ऐसे नियम बनाने पड़ते हैं जो ठीक उसी प्रकार बने हुए अन्य देशों के नियमों से कुछ भिन्न होते हैं। हमारे देश का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है। इसमें विभिन्न धर्म, संप्रदाय, नस्लें और जातियों के लोग बसते हैं। उनकी अपनी परंपराएं भी कुछ अलग-अलग हैं। इस प्रकार हमारे राष्ट्रों में विविधताएँ और वैश्वीकरण हैं। अलग-अलग समुदाय के धार्मिक विश्वास, पूजा-पद्धति, भाषा आदि में भी अंतर दिखाई देता है। ऐसी स्थिति में एक सामान्य राष्ट्रीय हित का मार्ग खोजना कठिन हो जाता है। हमारे लोकतंत्र ने इसी कठिन मार्ग को अपनाया है। इसके लिए हमारी संविधान सभा ने धर्म निरपेक्ष लोकतांत्रिक व्यवस्था का मार्ग निकाला है। इसका अर्थ यह है कि हमने यह संकल्प कर चुके है कि किसी समुदाय विशेष के धार्मिक विश्वासों में राज्य की ओर से कोई हस्तक्षेप नहीं होगा। सब को अपने-अपने मार्ग पर चलने की स्वतंत्रता होगी। राज्य किसी एक धर्म को मान्यता नहीं देगा और सभी धर्मों के उन महान आदर्शों को अपनाया करेगा जो मानवता के पोषक और उन्नायक हैं। यह मार्ग कठिन है। इसमें सहनशीलता, उदारता और धैर्य के साथ सभी काम करना जरूरी है। पर कठिन होने पर भी यही मार्ग मनुष्यता का सही मार्ग है।

इसमें भाषा संबंधी समस्या कुछ अधिक जटिल हैं। हमारे देश के संविधान में बहुत विचार के बाद चौदह मुख्य भाषाओं को मान्यता दी गई है। इनमें एक संस्कृत भी है। संस्कृत हमारे देश की बड़ी शक्तिशाली और समृद्ध भाषा रही है। हमारे हजारों वर्षों के इतिहास में पीड़ियों तक देश के सर्वोत्तम विचारकों ने इस भाषा में अपने विचार लिपिबद्ध कर रखे हैं। इसलिए संस्कृत को देश मुख्य भाषाओं में स्थान देना उचित ही हुआ है। बाकी तेरह भाषाएँ देश के विभिन्न भागों में बोली जाती हैं। ये सभी भाषाएँ हमारे राष्ट्र की संपत्ति हैं। इसलिए इन सब की समृद्धि से ही समूचे राष्ट्र की समृद्धि संभव है।

भाषा की समृद्धि उत्तम साहित्य से होती है। भाषा की समृद्धि से उसके बोलनेवालों का जीवन स्तर ऊँचा उठता है, उनमें कार्य कारण परंपरा को सही-सही समझने की शक्ति विकसित होती है और उनके चरित्र में नैतिक निष्ठा का विकास होता है। राष्ट्र के सामूहिक सांस्कृतिक स्तर को ऊँचा उठाने का यह सर्वोत्तम उपाय है।

जो सरकार जनता के द्वारा चुनी जाती है, उसमें जनता की भाषा का प्राधान्द होना स्वाभाविक ही है। परंतु पिछले डेढ़-दो सौ वर्षों में हम एक पराधीन राष्ट्र के रूप में जीते रहे हैं। अंग्रेजों ने इस देश की शासन-व्यवस्था के लिए अंग्रेजी भाषा को सारे देश में प्रचलित किया था और हमारी अपनी भाषाओं का विकास रुद्ध हो गया था। अंग्रेजी भाषा द्वारा शासन-व्यवस्था चलाने का परिणाम यह हुआ कि हमारे देशवासियों को, जो भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलते हैं, एकसूत्र में बाँधने का काम अंग्रेजी ही करने लगी है, हालाँकि विदेशी भाषा होने के कारण वह देश की विशाल जनता में ठीक से रींज-पॉज नहीं सकी है। यही कारण है कि देश को एकसूत्र में बाँधने में वह कमजोर सिद्ध हुई है।

अंग्रेजी भाषा बहुत समृद्ध है और आजकल संसार के कई समृद्ध देशों में राजभाषा के रूप में स्वीकृत है। पर है यह विदेशी भाषा ही और देश की समूची जनता का एक नगण्य अंश ही उसमें कुशलता प्राप्त कर सका है। जनता का राज्य होने पर सारी जनता यदि अपनी भाषा में शासन तंत्र और न्याय-व्यवस्था को चलाने का अधिकार नहीं प्राप्त करती तो लोकतांत्रिक व्यवस्था निश्चित रूप से कमजोर हो जाती है। संविधान बनानेवाले नेताओं के मन में यह प्रश्न बहुत प्रमुख रूप में उपस्थित था।

इसको हल करने के लिए उन्होंने अपने देश की एक भाषा को चुना है जो विभिन्न राज्यों के आपसी व्यवहार की भाषा बहुत कुछ पहले से ही बनी हुई है। यह भाषा हिंदी है। देश की लगभग आधी जनता इस भाषा को बोल या समझ लेती है। इसीलिए ऐसा निश्चित किया गया है कि विभिन्न राज्यों में तो अपनी-अपनी भाषाएँ शासन-व्यवस्था के लिए काम में लाई जाएँ, परंतु सारे देश के लिए और राज्यों के पारस्परिक संबंधों के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाए। ऐसा करने से ही देश में हर अर्थ में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था कायम होगी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश में भाषाओं की प्रगति में काफी तेजी आई है। कई राज्यों ने अपने राजकाज के लिए अपने क्षेत्र में बोली जानेवाली भाषा को स्थान दिया है और विश्वविद्यालयों में भी तेजी से देशी भाषाएँ माध्यम के रूप में व्यवहत होने लगी हैं। परंतु अंग्रेजी अभी बनी हुई है। उसे एकदम हटा देने में भी कठिनाई है। धीरे-धीरे देशी भाषाएँ अपना उपयुक्त स्थान प्राप्त करती जा रही हैं और हिंदी के प्रचार का भी थोड़ा-बहुत प्रयत्न हो रहा है। जब तक हमारी अपनी भाषाएँ समुद्ध नहीं हो जातीं तब तक लोकतांत्रिक व्यवस्था कमजोर ही बनी रहेगी।

भारतवर्ष में अपनी समृद्ध संस्कृति को उजागर करने के लिए देशी भाषाओं को प्रोत्साहन देना बहुत जरूरी है। विदेशी भाषा में शिक्षा पाने से हमारा स्वतंत्र चिंतन कुंठित हो गया है। समूचे राष्ट्र के सांस्कृतिक अभ्युत्थान के लिए भी हमें अपनी भाषाओं को समृद्ध करना आवश्यक है।

यह प्रसन्नता की बात है कि स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद बहुत-सी बाधाओं और कठिनाइयों के होते हुए भी प्रादेशिक भाषाएँ उन्नति कर रही हैं। हिंदी भी सार्वदेशिक भाषा के रूप को अवश्य प्राप्त की करती जा रही है। अनेक विश्वविद्यालयों में एम ए तक पढ़ाई हिंदी में होने लगी है, लेकिन अभी बहुत प्रयत्न की आवश्यकता है। जब तक आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के हर क्षेत्र में उत्तम साहित्य का निर्माण नहीं होता तब तक भाषा संबंधी परमुखापेक्षिता बनी रहेगी। आशा की जाती है कि शीघ्र ही हमारी देशी भाषाएँ इस प्रकार के साहित्य से समृद्ध हो जाएँगी और हिंदी तो विशेष रूप से समृद्ध हो जाएगी। 'स्वराज्य' तभी सार्थक होगा जब 'स्वभाषा' की उन्नति होगी। जिस भाषा के माध्यम से साधारण जनता तक ज्ञान-विज्ञान पहुँच सकता है, उसकी उपेक्षा करना बहुत हानिप्रद होगा।

महात्मा गांधी ने आज से पचास साल पहले कहा था- "मैं अपनी अल्पबुद्धि के अनुसार इस बात से अवगत हूँ कि इस देश में बड़े-बड़े विद्वान् यह मानते हैं कि अंतरप्रांतीय उपयोग के योग्य भाषा तो अंग्रेजी भाषा ही है। लेकिन वह भाषा कदापि राष्ट्रभाषा नहीं हुई है, क्योंकि उसमें और हिंदी भाषा में किसी प्रकार की भी समानता नहीं है। राष्ट्रभाषा ऐसी सरल होनी चाहिए कि जिसे कोई भी सीख सके। यदि हम पराधीनता से ग्रस्त न हों तो हम आसानी से समझ सकते हैं कि ऐसी सामान्य भाषा की आवश्यकता है। अंग्रेजी सीखने के पीछे लाखों रुपया खर्च करने के बावजूद गिने-चुने लोग ही इस भाषा को सीख सके हैं और ऐसा होने पर भी उस भाषा पर पूर्ण अधिकार रखनेवाले लोग तो इक्के-दुक्के ही होते हैं। इस भाषा को सीखने के लिए जो प्रयत्न करना पड़ता है, उसे देखता हूँ तो मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि उससे देश का तेज क्षीण होता जा रहा है।" प्रसन्नता की बात है कि अपनी भाषाएँ अब सजग हो गई हैं। यदि ये समृद्ध हों तो देश का तेज भी शक्तिशाली होगा।

उठो और जागो और तब तक रूको नहीं
जब तक कि तुम अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लेते

जब हम हिंदी में सोचते हैं तो हिंदी में बोलते क्यूँ नहीं

हम भारतीय है। हिंदी हमारी भाषा है। किन्तु अंग्रेजी के प्रवाह में हम भूल जाते हैं कि हिंदी भाषा का प्रयोग कहाँ और कैसे करें। प्रश्न उठता है कि जब हम हिंदी में सोचते हैं तो हिंदी में बोलते क्यू नहीं? क्या हिंदी में बात करना हीन भावना को दर्शाता है? क्या हिंदी का उपयोग स्टेटस सिंबल का प्रतीक है? इन्हीं सवालों के मध्य हिंदी के उपयोग पर प्रश्न चिन्ह लगना स्वाभाविक है। किन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हिंदी बहुत सरल सहज और सुगम भाषा होने के साथ विश्व की संभवत सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद है। यह विश्व में तीतरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है।

हिंदी ने हमे विश्व में एक नई पहचान दिलाई है। विश्व की प्राचीन समृद्ध और सरल भाषा होने के साथ-साथ हिंदी केंद्र सरकार की राजभाषा भी है। यह भाषा है हमारे सम्मान स्वाभिमान और गर्व की। हमारी भाषा हमारे देश की संस्कृति और सस्कारों का बिंब है। आज विश्व के कोने-कोने से विद्यार्थी हमारी भाषा और संस्कृति को जानने के लिए हमारे देश का रुख कर रहे हैं। एक हिंदुस्तानी को कम से कम अपनी भाषा यानी हिंदी तो आनी ही चाहिए साथ ही हमें हिंदी का सम्मान भी करना सीखना होगा। कश्मीर से कन्याकुमारी तक साक्षर से निरक्षर तक प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति हिंदी भाषा को आसानी से बोल-समझ लेता है। यहीं इस भाषा की पहचान भी है कि इस बोलने और समझने में किसी की कोई परेशानी नहीं होती। पहले के समय में अंग्रेजी का ज्यादा चलन नहीं हुआ करता था. तब यही भाषा भारतवासियों या भारत से बाहर रह रहे हर वर्ग के लिए सम्माननीय होती थी। लेकिन बदलते युग के साथ अंग्रेजी ने भारत की जमीं पर अपने पांव गड़ा लिए है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों तथा सूचना प्रौद्योगिकी के बढ़ते चरण ने हिंदी के प्रयोग को सीमित कर दिया है। किन्तु विज्ञापन सिनेमा जगत तथा मीडिया के क्षेत्र में अभी भी हिंदी की उपयोगिता बरकरार है।

भारत की स्वतंत्रता के बाद 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने एकमत से यह निर्णय लिया कि हिंदी की खड़ी बोली ही भारत की राजभाषा होगी। इसी महत्वपूर्ण निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने तथा हिंदी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर सन 1953 से सपूर्ण भारत में प्रतिवर्ष 14 सितंबर हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। हिंदी हिंदुस्तान की भाषा है। राष्ट्रभाषा किसी भी देश की पहचान और गौरव होती है। हिंदी हिंदुस्तान को बांधती है। इसके प्रति अपना प्रेम और सम्मान प्रकट करना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है।

हमारे देश की मूल भाषा हिंदी है किंतु अग्रेजों ने न सिर्फ हमारे देश में शासन किया बल्कि अंग्रेजी ने हमारी भाषा हिंदी पर अपना पूरा आधिपत्य जमा लिया। भारत देश तो आजाद हो गया लेकिन हिंदी भाषा पर अंग्रेजी भाषा का आज भी आधिपत्य कायम है। अक्सर अपने देश के लोगों के मुह से यह सुनते हुए पाया गया है कि हमारी हिंदी थोड़ी कमजोर है इसके कहने का मतलब साफ-साफ समझ आता है कि उनकी अंग्रेजी हिंदी के मुताबिक ज्यादा अच्छी है और यदि कोई भूल से भी कह दे कि हमारी अंग्रेजी थोडी सी कमजोर है तो लोग उसे कम पढ़ा-लिखा समझते हैं। क्या यह सही है कि किसी भाषा पर हमारी पकड अच्छी नहीं है तो हम उसे अल्पज्ञानी मान लेंगे। चीनी भाषा के बाद विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी ही है। यहाँ तक कि विश्वभाषा बनने के सभी गुण हिंदी भाषा में है। अत: हिंदी बोलने में संकोच न करें। किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी भाषा और संस्कृति से होती है और पूरे विश्व में हर देश की एक अपनी भाषा और संस्कृति है जिसकी छाव में उस देश के लोग पले बढ़े होते हैं यदि कोई देश अपनी मूल भाषा छोड दूसरे की भाषा पर आश्रित होता है तो उसे सांस्कृतिक रूप से गुलाम कहते हैं। अत: स्मरण रहे कि एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की शान है बल्कि यह हमारे जीवन मूलों एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक भी है।

चन्द्रमा की सच्ची कथा

साभार : रवीन्द्र नाथ त्यागी

केशवदास को किसी चन्द्रमुखी ने एक बार बाबा कह दिया तो महाकवि को उदासी का दौरा पड़ गया। कुएं से हटकर घर जो आये तो लगे च्यवनप्राश का नुस्खा ढूंढ़ने। चांद की विजय के बाद इधर स्थिति यह हो गई है कि कवि केशव यदि किस मृगलोचनी को चन्द्रमुखी कह दें तो जूते खाने को मिलें। चांद पत्थर का एक बदसूरत टुकड़ा है जिसकी सतह पर काफी गहरे गड्ढे हैं। कौन युवती चाहेगी कि उसे अब चांद कहकर पुकारा जाए। 'मुख मयंक सम मंजु मनोहर तथा 'इंदु पर उस इंदु मुख पर साथ ही' वाली कविता के दिन अब वह गए। कालिदास के विदूषक ने दुष्यन्त से कहा था कि चांद एक लड्डू है जिसको कि वह खाना चाहता है। वह गरीब अब जिन्दा होता तो पता लगता कि वह नाश्ते में क्या मांग रहा था। चांद का रोमांस खत्म हो गया। चकोर की चाह अब केवल पागलपन रह गई। पाताललोक के तीन प्राणी गए और चांद का नमूना ले आए। चांद पर कुछ भी नहीं मिला। सच, कुछ भी नहीं। व खरगोश खिलाती परियां, न चरखा कातती बुढ़िया और न सितार बजाती चीन की शहजादी। खटमलों की जो आशा थी, वे भी नहीं मिले। खैर।

जैसा कि हममें से मेरे जैसे कुछ सयाने जानते होंगे, चन्द्रमा हमेशा इस तरह निर्जन और वीरान नहीं था। एक समय था कि वहां बड़ी रौनक थी। वहां बड़ी खूबसूरत स्त्रियां निवास करती थीं। बस, कुछ ऐसा हुआ कि एक दिन चांद को किसी के लिए बरबाद होना पड़ा। यह एक लम्बी कथा है मगर खुशी की बात यह है कि मैं बड़ी बात को छोटा करना भी जानता हूं।

बात यह हुई कि ब्रह्मा ने आदमी और औरत को बनाया तो साथ-साथ, मगर उसी वक्त उन्हें एक मजाक सूझ गया। उन्होंने पुरुषों को पृथ्वी पर भेज दिया और स्त्रियों को चन्द्रमा पर। इसके बाद बरामदे में सिहासन डालकर वे उनके क्रियाकलाप देखने लगे। आदमी ने जंगल काटे, शिकार खेला, जानवरों को साधा और कुएं खोदे। स्त्रियों ने मेहंदी लगाई, दीवारों पर तसवीरें बनाईं और केशों में फूल खोंसे।

इसके बाद एक दिन आदमी ब्रह्मा के पास आया और बोला कि मैं उदास रहता हूं। मुझे एक खास किस्म की भूख लगती है। मैं क्या करूं ? ब्रह्मा ने कहा 'तथास्तु' और उसे अन्न दे दिया। थोड़े दिनों बाद स्त्रियां भी गईं और कहने लगी कि उनके गले में दर्द रहता है, सीने में चुभन उठती है, टांगों पर चीटियां चलती हैं और नींद बहुत आती है। ब्रह्मा ने कहा 'तथास्तु' और उन्हें डोलक मंजीरे थमा दिए। थोड़ी अवधि बाद आदमी फिर आया और बोला कि इसे क्या करूं कि बाजू किसी को पकड़ना चाहते हैं और तबीयत करती है कि किसी का कचूमर निकाला जाए। ब्रह्मा ने कहा 'तथास्तु' और और उसे गदा दे दी। स्त्रियों का दल एक दल फिर पहुंचा। कहने लगा कि मन नहीं लगता, कलेजे में धुक-धुक होती है, रात को डर लगता है और शाम को किसी की बिना बात याद आती है। ब्रह्मा ने कहा 'तथास्तु' और उन्हें तुलसी का बिरवा, घी का चिराग और ठाकुरजी की मूर्ति दे दी। आदमी फिर पहुंचा कि उसका मन किसी को पाने के लिए निरंतर अकुलाता है, रात को नींद नहीं आती और सुबह को आलस आता है। ब्रह्मा ने कहा 'तथास्तु' और उसे ज्ञान और पहिया दे दिया।

मगर बात खत्म नहीं हुई। आदमी और औरत दोनों के दल हेड-आफिस जाते रहे और अपनी-अपनी मांगें पेश करते रहे। ब्रह्मा ने तय किया कि वास्तविक स्थिति का अध्ययन करने के लिए दोनों लोकों का दौरा तय किया जाए। एक दिन वे पृथ्वी पर इस तरह गए जिसे आजकल 'सरप्राइज विज़िट' कहते हैं। देखा, लोग उदास हैं। खेत पके खड़े हैं मगर कोई काटता नहीं। गाएं दूध से भरी खड़ी हैं पर कोई दूध दुहने वाला नहीं। अगर कहीं दूध दुह लिया गया है तो उसमें कोई पानी मिलाने वाला नहीं। उन्होंने लोगों को इकट्ठा किया और पूछा कि बताओ, अब क्या चाहते हो ?

मैकू ने बुद्ध को देखा और मुस्कराया।

बुद्ध ने चन्दू की तरफ आंख मारी और सिर झुका लिया। एक नौजवान ने पीछे से आवाज बदलकर कहा कि बाबा, हमें पतुरिया चाहिए। उसके बिना हमारा काम नहीं चलेगा।

ब्रह्माजी प्रसन्न हो गए। थोड़ी देर बाद आने का वचन दिया और पहुंच गए चन्द्रलोक। देखा कि स्थिति वहां भी नाजुक है। लड़कियों ने केश बढ़ा लिये हैं, रोते-रोते होंठ लाल कर लिये हैं और स्वर बारीक हो गया है। उन्होंने पूछा कि तुम्हें किस बात का कष्ट है, साफ-साफ कहो। तीज, त्यौहार, संगीत, ठाकुरजी और मेरे जैसे पिता के अतिरिक्त तुम्हें और क्या चाहिए ?

सब चुप रहीं।

ब्रह्मा ने प्रश्न दोहराया तो एक अल्हड़ लड़की दो अदद आंखे मटकाकर बोली कि हमने तो बहुत समझाया पर यह जो रामवती है न, कहती है कि बिना खसम के एक पल नहीं रह सकती। सब खिलखिलाकर कर हंस पड़ी।

ब्रह्मा बड़े प्रसन्न हुए। अब उनके बिना भी सृष्टि चल सकती थी। उन्होंने लंगोट कसा और एक-एक लड़की को बालों से पकड़-पकड़ पृथ्वी की ओर फेकना प्रारंभ किया।बाल खींचने के कारण कुछ लड़कियों की गर्दन सुराहीदार हो गई। सारी की सारी लड़कियां पृथ्वी पर सिर के बल गिरी और इसका परिणाम यह कि उनकी बुद्धि मोटी हो गई। फेंकने के कारण लड़कियों की जुबान उनके मुंह से बाहर निकली यह आज तक उसी स्थिति में है।

इसके बाद क्या हुआ, यह बताने की जरूरत नहीं।

एक लड़की चांद पर ऐसी भी थी जिसने पृथ्वी पर आने से इन्कार कर दिया। ब्रह्मा ने पूछा कि हे बालिके, तू क्यों नहीं जाती ? क्या तुझे पुरूष की कामना नहीं है?

लड़की चुप ।

ब्रह्मा बोले-अच्छा आ, तुझे दो पतियों का सुख मिलेगा।

लड़की फिर भी चुप ।

ब्रह्मा ने बतौर रिश्वत के तीन पति और दे दिए। लड़की ने आंसू पोंछे और कहा कि मैं एक वरदान मांगती हूं, मना मत करना। मैं यह बरदाश्त नहीं कर सकती कि मेरी इस झोंपड़ी में मेरे बाद कोई और लड़की रहे, इन नदियों और उपवनों में कोई और स्त्री विहार करे या मेरे झूले और गुड़ियों का कोई और उपयोग करे। मुंह नोच लूंगी उसका ! इन वस्तुओं को आप हमेशा-हमेशा के लिए नष्ट कर दीजिए।

ब्रह्मा लड़की की ईर्ष्या को समझ गए। उन्होंने 'तथास्तु' कहा और चन्द्रमा को वीरान कर दिया। वहां की सुगन्धित हवा को लड़की की सांसों में भर दिया, वहां के अमृत को उसके होंठों पर लगा दिया और चांद का मुंह हमेशा के लिए टेढ़ा कर दिया। पदाघात के कारण लड़की की कमर पतली और नितम्ब भारी हो गए और आंखें फैलकर कानों तक पहुंच गई। पृथ्वी पर आकर वह लड़की गजगामिनी तथा मृगनयनी कहलाई।

पृथ्वी पर आते ही उसे अपने पांचों पति प्राप्त हो गए। वह कुलवंती उन सबके यहां रहने लगी। वक्त-बेवक्त ऊपर को देखती और कहती कि मुझे तंग मत करना। वह जो चांद है वह मेरे बाप का घर है। मेरा बाप राजा है और मेरे भाई राजकुमार। मेरे यहां सोने के महल हैं और चांदी के घोड़े। हाय राम, मैं यहां कंगाली में कहां आ पड़ी ! अगर जरा भी चूं-चपड़ की तो मैं मैके चली जाऊंगी। हां। और वे पांचों मूर्ख उसकी बात सच मानते रहे और उसकी सेवा यथाशक्ति करते रहे। भगवान ने जैसा सुख उस लड़की को दिया, वैसा सब किसी को दें।

पर्यावरण प्रदूषण और अम्ल वर्षा

साभार : जल संकट चुनौतियां एवं समाधान

अम्ल वर्षा की समस्या पर्यावरण के लिए एक अलग प्रकार की समस्या है। यह समस्या औद्योगिक क्रांति के समक्ष नहीं थी। औद्योगिक क्रांन्ति ही इस समस्या की जन्मदाता है। इस समस्या की पहचान पहले सन् 1852 में राबर्ट स्मिथ द्वारा की गई एवं इस समस्या से निपटने के लिए सन् 1984 में अम्ल वर्षा सूचना केन्द्र की स्थापना की गई। इंग्लैंड के लीड्स विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक चार्ल्स क्रोथर एवं आर्थर जी. रुस्टेन द्वारा सन् 1911 में अम्ल वर्षा की प्रथम जानकारी दी गई थी। यह वर्षा 1947 में यूरोपीय देशों में देखी गयी। तत्पश्चात सन् १९७५ में नॉर्वे के वैज्ञानिकों ने झीलों में मछलियों की घटती संख्या का कारण अम्लीय वर्षा को बताया। भारत में सर्वप्रथम सन् 1974-75 में मुम्बई में अम्ल वर्षा हुई। वर्तमान समय में सल्फ्यूरिक एसिड वायु मंडल में इतनी अधिक मात्रा में पहुंच रहा है कि अम्लीय वर्षा के संबंध में खोजबीन प्रारंभ हो गई है।

वायुमंडल में सल्फर डाइ-ऑक्साइड, कार्बन डाइऑक्साइड गैस, नाइट्रिक आक्साइड आदि जल से मिलकर सल्फेट एवं सल्फ्यूरिक अम्ल का निर्माण करती है। जब इन अम्लों का वर्षा जल के साथ भूतल पर अवपात होने लगता है तो उसे अम्ल वर्षा कहा जाता है। अम्ल वर्षा का लगभग 70 प्रतिशत सल्फर डाइ-ऑक्साइड और 30 प्रतिशत नाइट्रोजन ऑक्साइड से होता है। शुष्क रूप में भी अम्ल वर्षा होती है जिसे अम्ल विक्षेपण कहा जाता है।

अम्लता की माप

पी.एच. इकाई में अम्लता की माप की जाती है। पी.एच. मापक 0 से 14 तक निर्धारित किया गया है। पी.एच. तटस्थ मान 7.0 माना गया है। इससे अधिक पी.एच. मान क्षारीयता का तथा इससे कम पी. एच. मान अम्लता का घोतक है। ज्यादा मान 5 से 2.5 के मध्य माना गया है। वर्षा जल का मान सामान्यतः 5 होता है। जल का पी.एच. मान 5 से कम होने पर वह जल जैव समुदाय के लिए विपरीत होता है।

अम्ल वर्षा :स्रोत

अम्ल वर्षा स्रोत निम्न प्रकार के होते हैं-

मानव जनित स्रोत- स्वचालित वाहन एवं खनिज तेल-शोधन शालाएं तथा ताप विद्युत-गृह इसके अंतर्गत आते हैं। जहाँ पर जैव ईंधनों को जलाकर विद्युत उत्पन्न की जाती है। इन स्रोतों से सल्फर डाइ-ऑक्साइड, नाइट्रिक ऑक्साइड तथा कार्बन डाई-ऑक्साइड का निर्माण होता है। ये वायु मंडल में पहुंचकर जल के साथ रासायनिक अभिक्रिया करके क्रमशः सल्फ्यूरिक एसिड, नाइट्रिक एसिड और कार्बनिक एसिड का निर्माण करते हैं। वायुमंडल में स्थित ये अम्ल वर्षा जल के साथ भूतल पर गिर कर अम्ल वर्षा करते हैं। इस प्रकार मानवजनित संसाधनों से ही मुख्यतः अम्ल वर्षा होती है।

प्रकृतिजन्य स्रोत- इसके अंतर्गत ज्वालामुखी से निसृत लावा एवं कार्बनिक पदार्थ आते हैं, जिनसे अम्ल का निर्माण होता है। लेकिन प्रकृति स्व-नियामक प्रक्रिया द्वारा इस अम्ल को आत्मसात कर लेती है। परिणामस्वरूप प्रकृतिजन्य स्रोतों से उत्पन्न अम्ल का अम्ल वर्षा के होने में कोई विशेष योगदान नहीं होता है।

अम्ल वर्षा : वितरण

अम्ल वर्षा औद्योगीकरण की देन है। इसलिए जिन विकसित एवं विकासशील देश का औद्योगिकीकरण हुआ है वहां पर अम्ल वर्षा हो रही है। यह वर्षा सिर्फ औद्योगिकीकरण वाले क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं है, क्योंकि अम्ल वर्षा के लिए जिम्मेवार स्रोत सल्फर डाइ-ऑक्साइड को हवा एवं बादल दूरस्थ क्षेत्रों तक उड़ा ले जाते हैं। जैसे यूनाइटेड किंग्डम, जर्मनी के उद्योगों एवं स्वचालित वाहनों से निसृत व्यापक सल्फर डाई आक्साइड तथा नाइट्रिट ऑक्साइड स्वीडन तथा नॉर्वे तक हवा एवं बादलों के साथ-साथ चले जाते हैं। जहां वे भारी अम्ल वर्षा करते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, यू.के., जर्मनी, नार्वे, स्वीडन, फिनलैंड, सोवियत रूस सहित भारत में भी अम्ल वर्षा हो रही है।

रासायनिक उद्योगों एवं स्वचालित वाहनों, धातु गलाने वाले संयत्रों, कागज उद्योग, चमड़ा उद्योग, कपड़ा उद्योग आदि से बहुत अधिक मात्रा में सल्फर साइ-ऑक्साइड वायुमण्डल में पहुंच रहा है जिससे भारत में भी अम्ल वर्षा का खतरा मंडरा रहा है। वर्षा जल का पी.एच. मान मुम्बई में 4.45, ट्रॉम्बे में-4.85, कोलकाता में 4.8. चेन्नई में 4.85 तथा दिल्ली में 6.21 ऑका गया है। ये आंकड़े वर्षा जल अंश होने के सूचक है। लेकिन भाभा एटामिक रिसर्च सेन्टर तथा वर्ल्ड मैटिओरोलॉजिकल आर्गनाइजेशन ने अपने अध्ययनों के अन्तर्गत बताया है कि भारत के ज्यादा नगरों में वर्षा जल में अम्लीय अंश सुरक्षा सीमा के भीतर है।

अम्ल वर्षा : दुष्परिणाम

अम्ल वर्षा के दुष्परिणाम निम्न है-

जलीय जीवों की मृत्यु- अम्लीय वर्षा से जल भण्डार विषाक्त हो जाता है। जिससे उसमें रहने वाले जीव मरने लगते हैं। अम्ल वर्षा का सर्वाधिक शिकार मछलियां हो रही हैं। स्वीडन, नार्वे, कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका एवं पश्चिमी यूरोपीय देशों में अम्ल वर्षा को झील कातिल कहा जाता है क्योंकि इस वर्षा से जलीय जीव मर जाते हैं।

मानव समुदाय पर दुष्परिणाम - अम्ल वर्षा का मानव समुदाय पर बुरा प्रभाव पड़ता है। लेकिन इससे उत्पन्न बीमारियों की जानकारी अभी नहीं हो पाई है। फिर भी ऐसा अनुमान है कि अम्ल सल्फेट से 7000 से 12000 लोगों तक की प्रतिवर्ष मृत्यु होती है। सल्फर डाइ-ऑक्साइड के कारण धूम कुहरे की उत्पत्ति होती है जिससे मानव का श्वसन तन्त्र कुप्रभावित होता है तथा आँख, गले एवं फेफड़े के रोग होने की सम्भावना रहती है।

भवनों का संक्षारण - अम्ल वर्षा के कारण भवनों, ऐतिहासिक स्मारकों, कलाकृतियों आदि का संक्षारण होने लगता है जिससे उनको भारी क्षति होती है। मथुरा स्थित तेल-शोधक कारखानों से निसृत सल्फर डाइ-ऑक्साइड के कारण ताजमहल की दीवारों के पीले होने एवं संक्षारित होने की सम्भावना उत्पन्न हो गई है। पश्चिमी देशों में जहाँ अम्ल वर्षा होती है, वहाँ की प्राचीन मूर्तियाँ और कलाकृतियों को अम्ल वर्षा के प्रकोप से बचाने हेतु उन पर रंगों का लेप चढ़ा कर संग्राहलयों में सुरक्षित रखा गया है।

जल स्रोतों पर दुष्परिणाम- अम्लीय वर्षा के होने से जल भण्डारों यथा-नदी, झील, तालाब, सागर इत्यादि का जल प्रदूषित हो जाता है। इस वर्षा से कनाडा, नार्वे, संयुक्त राज्य अमेरिका, स्वीडन आदि देशों की झीलें मृत घोषित की जा चुकी हैं।

कनाडा के ओंटेरियो प्रान्त की लगभग 150 झीलें अम्ल वर्षा से कुप्रभावित हुई और उनमें से 140 झीलों को मृत घोषित किया जा चुका है।

वन संसाधनों का विनाश - अम्ल वर्षा से वनों का विनाश हो रहा है। इस वर्षा से जर्मनी एवं चेकोस्लोवाकिया के वन समाप्ति के कगार पर हैं। स्वीडन, कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका, नॉर्वे आदि देशों में वन भी इस वर्षा के कारण नष्ट होने के कगार पर हैं। इस वर्षा से पेड़ों की पत्तियों का विनाश हो जाता है।

मिट्टी उत्पादकता में गिरावट - अम्ल वर्षा का जल मिट्टी में पहुंच कर उसे अम्लीय बना देता है जिससे उसकी उर्वरता समाप्त हो जाती है। इस वर्षा से मिट्टी के अंदर के सूक्ष्म जीव-जंतु, जीवाणु, कवक जो पोधों की वृद्धि में मदद करते हैं वे नष्ट हो जाते हैं। इससे मिट्टी में वर्तमान खनिज और अन्य पोषक तत्व समाप्त हो जाते हैं। परिणामः कृषि उत्पाद प्रभावित होता है।

अम्ल वर्षा पर नियंत्रण के उपाय

1. CO2, एवं नाइट्रिक की मात्रा को वायु मंडल में बढ़ने से रोकना।

2. वायुमण्डल में सल्फर डाइ-ऑक्साइड का उत्सर्जन कम किया जाए।

3. ऐसी तकनीक का स्वचालित वाहनों में विकास किया जाए कि उनसे CO2 उत्सर्जन कम से कम हो सके।

4. यूरोप के युवकों ने यूरोपियन यूथ फ़ॉर एक्शन नामक संस्था को जन्म दिया है जो इस वर्षा को रोकने के लिए काम कर रही है। ऐसी संस्थाएँ अन्य देशों में भी बनाई जानी चाहिए। इस क्षेत्र में स्वयंसेवी संगठन अधिक उपयोगी हो सकते हैं।

5. पुरा जैव ईंधन को जलाने से सल्फर डाई आक्साईड गैस उत्पन्न होती है। इसलिए इन इंधनों को कम-से-कम जलाया जाये।

6. अम्लीय वर्षा पर नियन्त्रण स्थापित करने हेतु सम्मेलनों का आयोजन किया जाना चाहिए। जून, 1983 में स्वीडन में एक ऐसी बैठक का आयोजन किया गया था जिसमें सन् 1993 तक सल्फर डाइ-ऑक्साइड के जनन में 30 प्रतिशत की कमी का निर्णय लिया गया था। इस प्रकार के निर्णय अन्य विकसित देशों में भी लिये जाने चाहिए क्योंकि यह वर्षा CO2 उत्पादक देशों तक ही सीमित नहीं रहती है।

उपरोक्त विवरणों से यह सुस्पष्ट होता है कि अम्लीय वर्षा के स्रोतों को ही नष्ट करके इसके कुप्रभावों से बचा सकता है।

जहाँ है अकाउंट, वहीं से लें क्रेडिट कार्ड

साभार : उपभोक्ता : जाने अपने अधिकार

क्रेडिट कार्ड इस्तेमाल करना जितना आसान है, उतना ही मुश्किल है इसकी हिफाजत करना। क्या है क्रेडिट कार्ड सम्बन्धी नियम और कैसे करें इसका इस्तेमाल, आइए जानते हैं-

कार्ड लेने से पहले

- अगर आपने क्रेडिट कार्ड लेने का मन बना लिया है, तो सबसे पहले बाजार में उपलब्ध तमाम स्कीमों की जानकारी लें। कुछ बैंक लाइफ टाइम फ्री कार्ड स्कीम भी देते हैं। ऐसे में आपको सालाना फीस नहीं देनी होगी।
- उस बैंक को प्राथमिकता दें, जहाँ आपका अकाउंट है।
- कार्ड के लिए अप्लाई करने से पहले सम्बन्धित क्रेडिट कार्ड के नियम और शर्तों को अच्छी तरह पढ़ लें। साथ ही तमाम ट्रांजैक्शन पर लगने वाले चार्जेस की जानकारी भी लें।

क्या हैं आपके अधिकार ?

- ग्राहकों को क्रेडिट कार्ड ऑफर करते समय सभी बैंकों या उनके प्रतिनिधियों के लिए जरूरी है कि वे ग्राहकों को नियम एवं शर्तों की जानकारी भी उपलब्ध कराएँ। ऐसी ही जानकारी फॉर्म भरते समय और क्रेडिट कार्ड की डिलिवरी के समय भी दी जानी चाहिए।
- कार्ड कम्पनी को कस्टमर्स को यह बताना चाहिए कि किस सर्विस पर कब और कितने फीसदी चार्ज लगेंगे। ब्याज राशि की जानकारी वार्षिक आधार पर दी जानी चाहिए।
- कार्ड कम्पनी/बैंक कोई भी ऐसी राशि चार्ज नहीं कर सकता, जिसकी जानकारी इस्तेमाल करने वाले द्वारा साइन किए गए पेपर्स में न हों।
- बैंक अगर चार्जेस बढ़ाता है तो उन्हें लागू किए जाने से एक महीना पहले यूजर्स को सूचित करना जरूरी है। इस स्थिति में यदि कोई ग्राहक अपना कार्ड वापस करना चाहता है तो बैंक को उसे वापिस लेना होगा, बशर्ते ग्राहक ने बकाया रकम का भुगतान कर दिया हो।
- अगर आपने कार्ड पर 'ऐंड ऑन' सुविधा ली है, तो दोनों कार्डों पर बकाया रकम के लिए आप ही जिम्मेदार होंगे।
- बैंक अगर आपकी क्रेडिट कार्ड ऐप्लिकेशन रिजेक्ट कर देता है तो बैंक को इसकी वजह बतानी होगी। आप बैंक से अपने कागजात वापिस मांग सकते हैं।
- अगर बैंक आपके निवेदन के बिना आपको कार्ड जारी करता है, और उसका बिल भेजता है, तो आप बैंक से बिल की रकम से दोगुनी पैनल्टी वसूल कर सकते हैं। अगर बैंक भुगतान न करे, तो ओम्बड्समैन को लिखे। ऐसी शिकायतों पर फौरन कार्यवाही होती है।
- डू नॉट डिस्टर्ब' में रजिस्टर कराए जाने के बाद कोई बैंक आपको मैसेज या कॉल करके डिस्टर्ब नहीं कर सकता।

- बकाया राशि की वसूली के लिए बैंक या उसके रिकवरी एजेंट आपको डरा-धमका नहीं सकते।
- बैंक प्राइवेट कम्पनियों के माध्यम से क्रेडिट कार्ड का संचालन करते हैं। इन कम्पनियों द्वारा की गई धोखाधड़ी या दूसरी शिकायतों के लिए बैंक जिम्मेदार होते हैं।
- केडिट कार्ड कम्पनी बैंक की यह जिम्मेदारी है कि वह कस्टमर को समय पर बिल पहुंचाए।
- सभी क्रेडिट कार्ड कम्पनियों बैंकों के लिए यह जरूरी है कि उनके यहाँ ग्राहकों की शिकायतों पर कार्यवाही के लिए अधिकारी नियुक्त हो। इस अधिकारी का नाम, पता एवं दूरभाष नम्बर मासिक बिल में होना चाहिए।

ध्यान रखें

- जैसे ही आपको क्रेडिट कार्ड गुम हो जाने का पता चले, तुरन्त कॉल सेन्टर (हेल्पलाइन) पर फोन कर कार्ड को ब्लॉक करा दें। अगर ब्लॉक कराने से पहले कार्ड से कोई शॉपिंग हुई है तो उसका दण्ड आपको भुगतना होगा। कॉल सेन्टर का नम्बर हमेशा अपने पास रखें।
- क्रेडिट कार्ड से भुगतान करते समय स्लिप पर साइन करने से पहले उसकी डिटेल्स अच्छी तरह से चेक करें। इस स्लिप को तब तक सम्भाल कर रखे, जब तक आप इसके बिल से मिलान न कर लें।
- अगर आपका बैंक आपके कार्ड पर सालाना फीस चार्ज कर रहा है और नए ग्राहकों को फ्री ऑफर करता है तो आप अपने कार्ड को भी इसी कैटिगिरी में चेंज करा सकते हैं। बैंक ऐसा करने से मना करते हैं, लेकिन उन्हें ऐसा करना चाहिए।
- क्रेडिट कार्ड के बिल का भुगतान करने से पहले अच्छी तरह से चेक कर लें। अगर उसमें कोई गड़बड़ है तो तुरन्त बैंक को सूचित करें।
- एटीएम मशीन से क्रेडिट कार्ड की मदद से पैसे निकालते समय स्लिप इधर-उधर न फेंके। ऐसा होने पर आपके कार्ड की जानकारी दूसरे को मिल सकती है।
- साइबर कैफे में ऑनलाइन क्रेडिट कार्ड से पेमेंट करते समय हमेशा सतर्क रहें। अपनी मेल आईडी को ध्यान से साइन-आउट करें।
- अपने कार्ड का पिन नम्बर, सिक्योर कोड एवं सीवीबी नम्बर की जानकारी कभी भी किसी को न दें।

हेल्पलाइन

- क्रेडिट कार्ड से सम्बन्धित कोई भी शिकायत होने पर बैंक की हेल्पलाइन से सम्पर्क करें। क्रेडिट कार्ड कम्पनी को लिखित में सूचित कर सकते हैं। आपकी शिकायत पर 60 दिन में करिवाई कर आपको सूचित करना उनकी जिम्मेदारी है।
- अगर इस अवधि में जवाब न मिले या आप उससे सन्तुष्ट नहीं हैं तो अपने क्षेत्र के बैंकिंग ओम्बड्समैन को पूरी जानकारी देते हुए अपनी शिकायत भेज सकते हैं। इसके साथ बैंक/कम्पनी से की गई शिकायत सम्बन्धी पेपर्स लगाएँ। दिल्ली, हरियाणा और गाजियाबाद के सभी बैंकों के ग्राहक शिकायत के लिए इस पते पर लिख सकते हैं। बैंकिंग ओम्बड्समैन, रिजर्व बैंक बिल्डिंग, द्वितीय तल, संसद मार्ग, नई दिल्ली-110001, दूरभाष : 011-23730632/633

सुबह का उपहार

उदय काल की पहली किरण, गुन गुने स्पर्श का अहसास दिलाती,
लाई सुबह का उपहार, इस संसार को नया जीवन देती,
नीले आकाश में फैली लालिमा, रंगों का मेल अद्भुत कलाकृति,
बादल चीरते, पर्वत छूते, चारों ओर फैली कोमल किरण,
मनोज्ञ उपहार आँखों को भाती, स्वर्ण वर्ण प्रकृति पे छाती,
खिलखिलाते हँसते सूर्यमुखी, पंख फैलाये उड़ते पंछी,
बहते झरने, ठंडी हवाएं, पक्षियों की चहचहाहट,
फड़फड़ाती तितलियां, गुन गुनाते भँवरे, प्रकृति का सुरीला संगीत,
खुशबू फैलाते खिलते फूल, सर हिलाती झूमती हरियाली,
सुंदरता का निराला दृश्य, मनमोहक भेंट है पंचेन्द्रियों को।
चंचल मन को सुकून देती, धरती पर स्वर्ग का नजराना देती।
जगमगाती स्वर्ण किरणें, सुबह का उपहार धन्य धरती पर।

सी एच. उदयश्री,
डी.ई.ओ
हैदराबाद कार्यालय

आदेशों और अवकाशों से मनते राष्ट्रीय पर्व

साभार : दूषित होने की चिंता

बचपन की स्मृतियों में स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त), गणतंत्र दिवस (26 जनवरी), गांधी जयंती (2) अक्टूबर) की जो छवि बनी हुई है धीरे धीरे अब वह ओझल होती लगती है। स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े पिता की संतान होने के कारण ऐसे अवसरों पर घर में एक अलग माहौल रहता था। कई दिनों से तैयारी चलती। प्रभात फेरी निकलती, बच्चे, बड़े बूढ़े सभी उत्साहित दिखते। सभी चौराहों पर सुबह से ही तेज आवाज में राष्ट्रगीत बजते । चारों ओर उत्सव का माहौल रहता। दोपहर में बच्चों को देश भक्ति की फिल्म दिखाई जाती, शाम को जगह-जगह राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत कार्यक्रम होते। धीरे-धीरे माहौल बदलता-सा दिखने लगा है। अब ऐसे समारोह सत्तारूढ़ पार्टी के या सरकारी होकर रह गए हैं। स्वतंत्रता संग्राम में शामिल पीढ़ी के धीरे-धीरे समाप्त होते, देशभक्ति का जज्वा भी कम होता दिखता है। जिस तरह से हमारे यहाँ परंपरागत धार्मिक पर्व बड़े ही उत्साह उमंग के साथ मनाए जाते हैं। उस तरह का उत्साह राष्ट्रीय पर्व पर नहीं होता। राष्ट्रीय पर्व को सामान्यतः लोग अवकाश दिवस के रूप में मनाते हैं। राष्ट्रीय पर्व पर होने वाले आयोजन खालिस शासकीय आयोजन होकर रह जाते हैं। आम आदमी की जिस तरह की भागीदारी इन पर्वों में होनी चाहिए वह नहीं दिखती। आम आदमी ऐसे राष्ट्रीय पर्वों पर सुरक्षा कारणों से. यातायात व्यवस्था में उत्पन्न अवरोध और पार्किंग आदि की समस्या के कारण बड़े शहरों, महानगरों से दूर रहता है। वहीं दूसरी ओर एक रुटीन की तरह मनाए जाने वाले इन पर्वों के समारोह में कोई खास नवीनता नहीं होती। राष्ट्रीय स्तर से लेकर प्रादेशिक स्तर तक पढ़े जाने वाले राष्ट्र/प्रदेश की जनता के नाम से संदेशों में अपने-अपने कार्यों का, सरकार की उपलब्धियों का बखान होता है देश और प्रदेश के स्वतंत्रता आंदोलन, राष्ट्रीय भावना पैदा करने वाले विचारों/संदेशों की कमी रहती है। सरकारी झाँकियाँ, फिल्मी गानों पर पी० टी० करते बच्चे और एक सी पढ़ी जाती कमेंट्री, सभी कुछ 'मोनोटोनस' होता है।

राष्ट्रीय पर्व मनाने के लिए हर बार शासन स्तर पर आदेश जारी होते हैं। अलग-अलग विभागों को स्वतंत्रता दिवस/गणतंत्र दिवस मनाने के लिए दायित्व सौंपे जाते हैं। स्कूलों, कॉलेजों को भी फरमान जारी होते हैं। ऐसे फरमानों से रैली की शक्ल में निकली भीड़ में उत्साह की कमी साफ दिखलाई पड़ती है। यह सब एक रुटीन की तरह होता है। जिसमें वही सरकारी फार्मूला होता है। पीछे देख, आगे चले यानी आयोजन के पूर्व पुरानी फाइल खोलें पिछले साल जो कुछ हुआ था उसी की तर्ज पर इस साल भी सारी व्यवस्थाएँ होंगी। इस पूरे कार्य में उस तरह का कहीं कोई जुड़ाव नहीं दिखता जैसा कि हमारे लोकउत्सव या धार्मिक उत्सव में दिखाई देता है। स्वतंत्रता, स्वाधीनता के इन पर्वों में आमजन की भागीदारी बहुत कम होती है। आम घरेलू महिलाओं का इन राष्ट्रीय पर्वों से सामान्यतः उतना ही सरोकार होता है जितना कि उनके बच्चों को स्कूल के कार्यक्रमों, रैली आदि में भाग लेने का होता है। यदि अनिवार्यता न हो तो कोई अपने बच्चों को भी ऐसे राष्ट्रीय पर्व के समारोह में न भेजें। हमारे जो भी उत्सव त्यौहार, आयोजन बड़े जोर-शोर से मनाए जाते हैं, उसमें हमारी महिलाओं की जबर्दस्त भागीदारी और उत्साह होता है। हमारे बहुत से त्यौहार महिलाओं की वजह से ही मनाए जाते हैं वरना कामकाजी पुरुष को तो कई बार त्यौहार के आने का भान भी नहीं होता।

राष्ट्रीय पर्व में महिलाओं की अनुपस्थिति या फिर कम भागीदारी के कारण ही ये पर्व उस तरह से हमारे घरों में जगह नहीं बना पाए हैं जैसे कि हमारे धार्मिक पर्व होली, दीवाली, गणेशोत्सव, ईद, बकरीद, क्रिसमस, गुरुनानक जयंती। हमारे धार्मिक त्यौहार की तरह हमारे राष्ट्रीय पर्व जनमानस को स्वप्रेरित नहीं कर पाए और महिलाओं की अनुपस्थिति इसका एक बड़ा कारण है। यदि हम इसके कारणों की पड़ताल करें तो हमें बहुत से कारण दिखाई पड़ते हैं। पहला बड़ा कारण राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े शहीदों, नेताओं, व्यक्तियों के नाम से मात्र स्कूल, कॉलेज और दीगर संस्थाओं के नाम रखे जाते हैं किंतु वहाँ पढ़ने वाले बच्चों को इसके बारे में नहीं बताया जाता। न ही शिक्षकों में इस दिशा में कोई उत्सुकता दिखलाई पड़ती है। हिंसा, आतंकवाद और मारधाड़ के इस दौर में बड़े हो रहे बच्चों को लगता है कि आजादी की लड़ाई में जेल जाना या एसेम्बली में केवल बम फेंकना या किसी अंग्रेज की हत्या कर देना कोई बहुत बड़ी बात नहीं थी। अहिंसात्मक आंदोलन तो

उन्हें निराश ही करता है। गांधी जी उन्हें अप्रासंगिक दिखलाई पड़ते हैं। उन्हें स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ी घटनाएँ छोटी लगने लगती हैं। यही वजह है कि स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ी फिल्में भी उन्हें उस तरह प्रोत्साहित नहीं करतीं जैसी कि अन्य कमर्शियल फिल्में। यही कारण है कि इन फिल्मों को टैक्स फ्री करने के बाद भी राष्ट्रभक्ति की फिल्में ज्यादा नहीं चलतीं। कोई इतिहास में जाना नहीं चाहता, सब वर्तमान में जीना चाहते हैं। ऐसी पीढ़ी भी धीरे-धीरे समाप्त हो रही है जो इतिहास बोध कराए। नाना, नानी, दादा, दादी के किस्सों-कहानियों का स्थान अब टी० वी० के धारावाहिकों ने ले लिया है। टी० वी० सीरियलों, कार्यक्रमों से भी स्वतंत्रता आंदोलन गायब है।

हमारे राष्ट्रीय पर्व जो हमारी आजादी, हमारे संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकारों की याद दिलाते हैं, हमारे राष्ट्रीय नेताओं की जयंती और आजादी की लड़ाई से जुड़ी अनेक तिथियाँ, व्यक्तित्व, स्थान हमारी स्मृति से विस्मृत हैं। आम आदमी अपने आपको आजादी के इन पर्वों से दूर पाता है। उसे कहीं यह अहसास है कि यह आजादी अधूरी है, यह आजादी कुछ लोगों के लिए है आजादी के मायने सही अर्थों में लोगों तक पहुँचें और आजादी की लड़ाई जिन मूल्यों, सपनों को पूरा करने के लिए लड़ी गई थी वे हों, तब जाकर लोगों को सही मायने में आजादी महसूस होगी। हम सब विचारें कि हम कब तक आदेशों और अवकाशों से अपने राष्ट्रीय पर्वों को याद रखेंगे।

अपनी शक्ति पहचानिए संचित कीजिए

साभार : आत्म विश्वास आपकी जीत

अंग्रेज़ी में एक वाक्य प्रसिद्ध है-'नो माई सेल्फ' अर्थात् स्वयं को पहचान। इसी प्रकार, आपको अपनी एक और महत्त्वपूर्ण वस्तु पहचानने की आवश्यकता है-शक्ति। आप नहीं जानते, आपमें शक्ति का कितना बड़ा ज्वालामुखी निहित है। शक्ति का एक महासागर, एक असीम आकाश, सम्पूर्ण ब्रह्म ! याद नहीं? आपके पूर्वज 'अहं ब्रह्म' के महामंत्र में आस्था रखते थे। इसी कारण, वे एक स्थान पर बैठे, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का भ्रमण कर लिया करते थे निमिष मात्र में। यह मिथ्या नहीं, सत्य है। अणु के आविष्कार ने यह प्रमाणित कर दिया है कि अणु ही सम्पूर्ण सृष्टि का बीज है। अणु से ही सबका निर्माण होता है। वही सबमें व्याप्त है। वही सबमें समाया हुआ है, घुला-मिला है। जैसे जल में दूध, दूध में शहद, शहद में शक्ति। वही सर्वशक्तिमान है। आप चाहें, उसे ईश्वर की संज्ञा दे सकते हैं।

शक्ति के अलग-अलग पक्ष हैं शक्ति ही जीवात्मा है। शक्ति नहीं, तो जीव नहीं। अतः यदि हमें जीवित रहना है तो शक्ति को पहचानना होगा। उसे संचित करना होगा। उसका सदुपयोग करना होगा। उसका बेकार में नष्ट करना स्वयं अपने आप को नष्ट करना होगा। एक अनुमान के अनुसार हम अपनी शक्ति का 99 पतिशत भाग व्यर्थ खर्च डालते हैं। केवल एक प्रतिशत ही सही उपयोग करते हैं। जिस प्रकार एक टन कोयले से निर्मित रोशनी का केवल एक प्रतिशत अंश ही बल्व तक पहुंच पाता है। उसी प्रकार हमारी शक्ति का सिर्फ एक प्रतिशत अंश गम्भीरतापूर्वक उचित ढंग से उपयोग हो पाता है। आज के वैज्ञानिक संसार के सम्मुख एक बहुत बड़ी चुनौती है कि नष्ट होने वाली 99 प्रतिशत रोशनी को नष्ट होने से कैसे बचाया जाए, और उसे मानव कल्याण के हेतु कैसे इस्तेमाल किया जाए।

इसी प्रकार हमें अपनी 99 प्रतिशत शक्ति को नष्ट होने से बचाना चाहिए क्योंकि शक्ति का एक-एक अंश मानव कल्याण एवं प्रगति के लिए मूल्यवान है इसीलिए हमें कम बोलने अथवा किसी विशेष अवधि के लिए बिल्कुल न बोलने की सलाह दी जाती है। हिन्दू समाज में तो वर्ष में एक दिन (अमावस्या मौन दिवस के रूप में मनाने का प्रावधान है जिसे आजकल के आधुनिक कर्मकाण्ड विरोधी तथाकथित प्रगतिशील सुधारक लोग पाखण्ड कह कर उपहास में उड़ा देते हैं परन्तु गम्भीरता से, वे भी मौन रहने में कोई दोष नहीं समझ पाते हैं। मौनी अमावस्या के अनुष्ठान अथवा व्रत के पीछे भी शक्ति संचय का ही उद्देश्य निहित है।

इसी प्रकार, प्राणायाम करने का परामर्श दिया जाता है, जिसके द्वारा श्वास को अन्दर लेकर कुछ देर तक रोका जाता है। श्वास रोकने की अवधि शनैः-शनैः बढ़ाई जाती है, यहां तक कि सिद्ध योगी काफी लम्बे समय तक श्वास रोके रहते हैं-उसी अवस्था को समाधि भी कहा जाता है। कहीं-कहीं इस समाधि की अवधि कई दिन लम्बी होती है। समाधि की सम्पूर्ण प्रक्रिया के अन्तर्गत, विश्वास किया जाता है, जितनी लम्बी होती है। समाधि की सम्पूर्ण प्रक्रिया के अन्तर्गत, निश्वास किया जाता है, जितनी लम्बी अवधि के लिए श्वास रोकी जाती है, उतनी ही क्षय की प्रक्रिया मध्यम हो जाती है और आयु बढ़ती है। इसके अतिरिक्त, मनुष्य को उसकी अन्य इन्द्रियों को विकसित करने में मदद मिलती है। वह एक स्थान पर ही बैठे-बैठे भूत, भविष्य व वर्तमान को जान लेता है। महाभारत की प्रत्येक घटना का आंखों देखा हाल संजय सम्राट धृतराष्ट्र को सुनाते रहे थे। ऐसे लोगों की बुद्धि अत्यन्त तीव्र एवं कुशाग्र हो जाती है। स्मरण शक्ति बढ़ जाती है और अन्य मानसिक विकास प्रक्रियाओं के साथ व्यक्ति अधिकतर रोगमुक्त रहता है। आचार्य रजनीश ने एक बार कहा था, जितनी श्वास हम लेते है वही हमारी है। उन्हें संचित करना चाहिए। जिन श्वासों को हमने छोड दिया वे तो नष्ट हो गई, वे हमारी नहीं रहीं। श्वास लेने और उसे रोकने की प्रक्रिया में व्यक्ति का शरीर (गर्व से) तन जाता है, ग्रीवा ऊपर उठ जाती है। मन एकाग्र हो जाता है। मस्तिष्क केन्द्रित हो जाता है। उस समय मनुष्य कुछ नहीं सोचता सिवाय इसके कि वह एक गौरवशाली व्यक्तित्व का स्वामी है। विशालता एवं व्यापकता की अनुभूति उसे अपूर्व आनन्द से सराबोर कर देती है। यही आनन्द मनुष्य को अपने साधारण धरातल से उठाकर विशेष स्तर के शीर्ष स्थान पर प्रस्थापित कर देता है। तभी उसे अपनी सही शक्ति का परिचय प्राप्त होता है।

मनुष्य का यौवन काल शक्ति की दृष्टि से स्वर्णिम काल माना जाता है। उस समय उसमें अपार शक्ति भरी हुई होती है। उसके मस्तिष्क, नाड़ियों और मांसपेशियों में कूट-कूट कर शक्ति भरी हुई होती है। उसके ही कारण उसके भीतर उत्साह का विशाल सागर उत्ताल तरंगों के साथ भयंकर से भयंकर तूफानों को झेलने के लिए सक्षम व तैयार रहता है। विश्वास की गहराई से प्रत्येक कार्य सम्पन्न करने के लिए प्रेरणा ऊर्जा के रूप में प्राप्त होती रहती है। सम्पूर्णता की भावना को कुचला नहीं जा सकता। शक्तियों की कोई सीमा नहीं रहती। बडे-से-बड़े प्रचण्ड बवण्डरों से टक्कर लेने के लिए वह हर समय तैयार रहता है। विश्व-विजय के लिए निकलकर सिकन्दर महान कहलाया जा सकता है। वह नेपोलियन अथवा गैरीवाल्डी हो सकता है। कैप्टन कुक बनकर दक्षिण ध्रुव की खोज कर सकता है। गांधी व सुभाष के रूप में संसार के ऐसे साम्राज्य की चूलें ढीली कर सकता है जिसके राज्य में सूर्य अस्त नहीं होता था। सैण्डो, गामा, नेनसिंह, हिलेरी, आर्मस्ट्रांग आदि सभी उसी शक्ति की विभिन्न तस्वीरें हैं।

किन्तु शर्त यह है कि प्रकृति की उस अद्भुत वरदान शक्ति का उपयोग सही तथा उचित रूप से किया जाए। परमाणु शक्ति से अणु बम भी बनाए जाते हैं जो हिरोशिमा व नागासाकी का विनाश कर सकते हैं। किन्तु इसके विपरीत, उसकी ऊर्जा को विश्व में रचनात्मक ढंग से उपयोग करके सम्पन्नता और समृद्धि का नया युग भी लाया जा सकता है। शक्ति रूपी चाकू आपके हाथ में है। चाहे उससे सेब काटकर किसी रोगी को खिलाइए, चाहे उसकी तेज धार से किसी मासूम की हत्या कर दीजिए। यह आपके विवेक पर है कि चाकू किस प्रकार इस्तेमाल करते हैं आप।

अनेक लोग युवा शक्ति का अनुचित लाभ उठाते हैं। यौवन के सिंहासन पर आरूढ़ मनुष्य अनुभव करता है कि उसके भीतर शक्तियों का अखण्ड स्रोत है। वह ऐसी पूर्णता का अनुभव करता है जो कभी कम नहीं की जाती। वह एक ऐसे विश्वास से लबालब भरा हुआ होता है कि अपनी शक्ति के आधार पर आश्चर्यजनक करतब कर सकता है। अधिकतर लोग दोषपूर्ण जीवन व्यतीत करना अपना विशेष उद्देश्य मानते हैं। ऐसे लोग दैनिक कार्यक्रम ही असाधारण बना लेते हैं। रात में देर तक सड़कों, चायखानों या क्लबों में समय गुजारते हैं या अड्डेबाजी करते हैं। रात में देर से सोने के कारण प्रातः देर से जागते हैं और आलस का लबादा ओढे कभी इधर लेटकर तो कभी उधर बरामदे में इठलाकर चाय बीडी या पान के साथ आधा दिन चढ़ा देते हैं। किसी का कहना न मान या सलाह टाल देना अपनी शान समझते हैं। बेतरतीब और अव्यवस्थित कपडे पहनना, दाढी बढ़ाए रखना, बाल कभी न संवारना एक प्रकार से मिशन मानते हैं। अपने कार्य में स्थिरता या स्थायित्व को अपनी बेइज्जती समझते क्योंकि उनकी समझ में स्थायित्व बन्धन है और वे सदा बन्धनमुक्त रहने में अपनी शान समझते हैं। शायद अपने भीतर के खोखलेपन को इसी प्रकार झूठी प्रवंचनाओं से ठीक कर दूसरों (विशेषकर लड़कियों) को आकर्षित करने के लिए इस प्रकार की भौड़ी व फूहड़ हरकतें करते फिरते हैं और शक्ति नष्ट करते हैं।

परन्तु जिन्दगी की दोपहरी तक पहुंचने पर जब सूर्य की तेज किरणें उन्हें सारी शान व 'आकर्षण' झुलसा देने के लिए उन पर आग बरसाती हैं बेतरतीबी, अव्यवस्था और आलस पसीना बनकर बह जाता है। तब शायद काफी देर हो चुकी होती है। तब ऐसा व्यक्ति उस प्रकाश को खोजने का प्रयास करता है जिसे वह अपनी सम्पूर्ण शक्तियों के साथ पैदा करना चाहता था कि उसे इसकी अपेक्षा थी। आज वही प्रकाश उसकी पिछली हरकतों के धुंधलक में धूमिल लगता है। उसे अपने भीतर संचित शक्ति की याद आती है जिसके बल पर वह कभी दुनिया को जेब में रख लेने के लिए चला था। प्रायश्चित्तर विशाल सागर यदि वह पार कर पाए तो निश्चित उसे पुनः शक्ति प्राप्त हो सकती है। चाहे वह पहले जैसी ताजा और नौजवान न हो फिर भी जीवन के नाव चलाने के लिए केवल दो पतवारों या एक मजबूत बादबान की तो जरूर पड़ेगी ही।

यदि एक युवक पहले अपने मां-बाप की कमाई पर इतराता था और अपनी शक्ति व्यर्थ गंवाता था तो उसके लिए अति भयंकर समस्या उत्पन्न हो गई है। उसने वे दिन तो गंवा दिए। तब मानसिक एवं शारीरिक रूप से वह मजबूत परन्तु उस मजबूती (शक्ति) को उसने शराब में डुबो दिया और रातों में सड़क पर घूम-घूम कर निचोड़ दिया। जो उसने गंवा दिया है उसे क्या वह प्राप्त कर सकेगा धन तो मिल भी सकता है परन्तु शक्ति का अपार भण्डार जो खर्च किया है उसकी भरपाई कैसे होगी? चरित्रहीनता के ही कारण यह सब घटता है। शक्तियों के अपव्यय के और भी कई तरीके हैं।

हमें कर्म, अकर्म तथा विकर्म का अन्तर जानने का बोध अवश्य होना चाहिए। ऐसा ही गीता में भी कहीं उल्लेख किया गया है। शक्तियों का अपव्यय तथा विनाश का कारण केवल चरित्रहीनता ही नहीं है बल्कि, अज्ञान, आलस और अनाड़ीपन है। साथ में लापरवाही भी। जैसा कि पहले निवेदन किया जा चुका है कि अव्यवस्थित व्यवस्था अथवा योजनाविहीन कार्यक्रम से किए गए कार्य से मनुष्य की संचित शक्ति का गलत उपयोग होता है, इससे गलत आदत पड़ जाती है। यह व्यक्ति किसी भी स्तर पर जा बैठे परन्तु टिड्डी दल अथवा मधुमक्खियों की तरह उसका पीछा नहीं छोड़ेगी उसकी वह आदत।

अतः शक्तियां निचोड़ने वाली हरकतों से हमें बचना चाहिए। चाहे वे कितनी भी आकर्षक क्यों न हों। यदि आपसे कोई गलती हो गई है, यदि आप उस गलती से सम्बद्ध है तो तुरन्त ठीक कीजिए। गलतफहमी दूर कीजिए। जो हो गया, तो हो गया-मानकर नए सिरे से काम शुरू कीजिए। गलती दुबारा न हो, यही बहुत है। शक्ति का अपव्यय बचेगा।

आज के नवयुवकों अथवा नवयुवतियों में उनसे पहले वाली पीढ़ी जैसी शक्ति, ऊर्जा व उत्साह आदि देखने को क्यों नहीं मिलता? क्या इसका कारण यह तो नहीं कि विज्ञान की दिन दूनी, रात चौगुनी होने वाली प्रगति के फलस्वरूप सभी कुछ सुलभ होता जा रहा है, मनोरंजन एवं सुभीता के साधन सुलभ हो गए हैं शायद, इसी कारण हमारे नवयुवक अधिक आरामतलब और मनोरंजन की ओर आकर्षित होते जा रहे हैं? परन्तु इसका मतलब यह तो बिल्कुल नहीं था कि आज की युवा पीढ़ी मात्र मनोरंजन में ही तल्लीन रहे और अपनी शक्ति इसी उछल-कूद में गंवा दे। बजाय इसके कि वह देश-समाज व विश्व के लिए हितकारी भूमिका अदा करे, वह ऊटपटांग, उछल-कूद में समय व शक्ति खर्च करें। यह नहीं जानती, वह कितनी बहुमूल्य वस्तु गंवा रही है। ऐसी चीज जिसकी भरपाई संसार की बहुमूल्य से बहुमूल्य वस्तु से नहीं की जा सकती। गंवाई हुई पूंडी वापस प्राप्त की जा सकती है। गवाई गई इज्जत भी दुबारा मिल सकती है, परन्तु गंवाई गई युवाशक्ति किसी भी दशा में दुवारा प्राप्त नहीं हो सकती।

दिन-भर ऊघते रहना, जम्हाइयां लेते रहना, आलस में पड़े रहना जैसे आज युवा फैशन बन गया है या यदि कुछ चेतनता या सक्रियता के चिह नजर आए भी तो रिकार्ड प्लेयर पर बजने वाली 'बोनी एम' जैसी पश्चिमी घुन पर झटको के साथ थिरकने की शक्ल में-क्या विश्वास कर सकते हैं आप कि ये ही आज के नौजवान आगे चलकर सुभाषचन्द्र बोस, नेपोलियन, मार्टिन लूथर 'किंग', गैरीवाल्डी, जवाहरलाल नेहरू और नेलसन मण्डेला आदि बनेंगे। अपने देश की व्यवस्था करेंगे, देश की विदेशी आपत्तियों-विपत्तियों से बचाने के लिए कमर कसकर खड़े हो जाएंगे-हिमालय पर्वत की तरह... जबकि इनकी शक्ति पहले ही चुक गई होगी?

ईश्वर न करे, ऐसा हो।

प्रसन्नता ही एकमात्र ऐसा इत्र है
जिसे आप दूसरों पर छिड़कते हैं
तो कुछ बूँदे आप पर भी पड़ती हैं.

- महात्मा गांधी

मनुष्य की तृष्णा का कोई अंत नहीं होता

साभार : नवभारत टाइम्स्

एक दिन मैंने अजीब सपना देखा। सपने में मैं ऐसा भिखारी हूं जिसने अपनी सारी उम्र की कमाई एक-एक पैसा जोड़ कर एक स्वर्ण मुद्रा खरीदी। फिर उस मुद्रा को ले कर मैं एक सेठ की हवेली के पास जा पहुंचा। सेठ ने मुझे भिखारी के वेष में देख कर हवेली का द्वार बंद करना चाहा। मैंने उसी समय वह स्वर्ण मुद्रा उसके द्वार पर गिरा दी। सेठ को बड़ा आश्चर्य हुआ। एक भिखारी के पास यह स्वर्ण मुद्रा भला कहां से आ गई?

मैंने उनके मन की बात सुन ली थी। उसके जवाब मैंने कहा- 'सेठ जी आज मैं भीख मांगने नहीं बल्कि एक सौदा करने आया हूं।' सेठ विस्मित नेत्रों से मुझे देखते हुआ बोला- 'भिखारी होकर मुझसे सौदा करेगा?' मैंने विनय पूर्वक प्रार्थना की-'हां, आपसे सौदा करना है मुझे। नगर सेठ मैंने सारी जिंदगी एक-एक पैसा जोड़ कर यह एक स्वर्ण मुद्रा खरीदी है। इसी को लेकर मैं आपसे सौदा करने आया हूं। यह स्वर्ण मुद्रा आप ले लें और बदले में, अपना खजाना मुझे मात्र एक घंटे के लिए दिखा दें। आपके खजाने से मैं एक पाई भी नहीं लेना चाहूंगा।'

सेठ को यह सौदा मुनाफे का लगा। उसने सोचा अजब पागल भिखारी है, जो सिर्फ एक घंटा मेरे खजाने को देखने भर के लिए अपने जीवन भर की कमाई मुझे सौंप रहा है। सेठ स्वर्ण मुद्रा लेकर मुझे अपने घर के भीतर ले गया। उसने अपने खजाने के द्वार मेरे लिए खोल दिए। मैंने जी भर कर खजाना देखा और जोर-जोर से चिल्लाकर कहने लगा- 'यह खजाना मेरा है, यह मेरा खजाना है।'

मेरे इस तरह चिल्लाने पर सेठ मुझ पर बड़े जोर से हंसा और बोला-'पागल, पहली मूर्खता तो तूने यह की कि अपनी जीवन भर की कमाई स्वर्ण मुद्रा गवां कर इस खजाने को देखने आया और दूसरी मूर्खता तू यह कर रहा है कि मेरे खजाने को अपना कह रहा है। कहीं तू सच में कोई पागल तो नहीं है?'

मैने सेठ को जबाब दिया- 'सेठ मैं एकदम भला चंगा हूं। एक घंटे तक मैं इस खजाने के भीतर हूं और उसको देख कर इसे मैं अपना कह रहा हूं। मुझ में और और आप में सिर्फ इतना ही फर्क है कि इस खजाने को आप कुछ वर्षों तक देखने के बाद अपना कह रहे हैं, और मैं सिर्फ एक घंटा देखने के बाद अपना कह रहा हूं। न यह खजाना मेरा है और न ही आपका है। मुझे एक घंटे के बाद यहां से चला जाना है और आपको कुछ वर्षों के बाद जाना है। मजेदार बात तो यह है कि किसी भी हालत में यह खजाना न मेरे साथ जाना है और न आपके साथ। मेरी तरह आप भी इसे देखते ही रहे। किसी सदुपयोग में तो आपने इसे कभी लगाया नहीं।'

ठीक इसके बाद मेरी आंख खुल गयी। सारा स्वप्न खंडित हो गया। न वहां कोई सेठ मौजूद था और न कोई खजाना। स्वप्न भले ही खंडित हो गया हो। लेकिन एक अखंड सत्य को वह जरूर उद्घाटित कर गया। स्वप्न और खजाने क्या कभी पूरे भर पाते हैं, प्रकृति आवश्यकता से जुड़ी है, तृष्णा से नहीं। तृष्णा की अठखेलियां ही निराली हैं। निर्धन इसलिए दुखी है कि उसके पास कुछ भी नहीं है और धनवान सब कुछ होते हुए भी परितृप्त नहीं। तृष्णा का कोई अंत नहीं है। इस पर उम्र का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता। एक तृष्णा ही ऐसी चीज है जो वृद्धावस्था में भी तरुणाई की ओर बढ़ती चली जाती है। उसकी तरुणाई का अहसास जब दूसरे नहीं करते तो वह मन को हताशा और तनाव से भर देती है। मनुष्य को दुखों से भर देती है। व्यक्ति के जीवन को आनंद विहीन कर देती है। पेट भरना मनुष्य की आवश्यकता है। परंतु पेटी या खजाना भरना उसकी तृष्णा है। मनुष्य को दरअसल इसी तृष्णा से बचने का उपाय करना है। यही उससे गलत काम करवाती है। यदि इसे एक बार काबू में कर लिया जाए तो सारे कष्ट दूर हो सकते हैं।

स्वप्न विश्लेषण से समझें समस्याएं

साभार : स्त्रियों की बदलती दुनियां

सपना एक बहुत ही दिलचस्प विषय है। शोधकर्ताओं ने उसे अपने-अपने तरीके से विश्लेषित किया है, चूंकि स्वप्न का हमारे अवचेतन मन से गहरा संबंध होता है। ये हमारे व्यक्तित्व से जुड़े होते हैं।

मधु टंडन ने अपनी किताब 'डायलॉग विद ड्रीम्स' में लिखा है कि यदि व्याख्या सही ढंग से की जाए तो सपने हमें अपनी समस्याएं समझने में मदद कर सकते हैं और यहां तक कि भावी घटनाओं का संकेत भी दे सकते हैं।

यह सच है कि कई बार ऐसा देखा गया है कि भविष्य में होने वाली घटनाओं का पूर्वाभास लोगों को सपनों में हुआ है। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने अपनी मौत का सपना मौत से ठीक एक सप्ताह पहले देखा था।

कभी-कभी सपने आनंददायक भी होते हैं। इनसे झरता आनंद जगाने के बाद भी कुछ देर तक मन मस्तिष्क, तरंगित किए रहता है मगर डरावने, डिप्रेसिंग सपने कई बार हफ्तों तक मन को आतंकित और डिप्रेस किए रहते हैं।

डॉक्टर स्टैनली के अनुसार मानव मस्तिष्क छोटी-छोटी घटनाओं एवं जानकारियों को एक संगठित रूप देकर ऐसे निष्कर्ष (स्वप्न के रूप में) पर पहुंचता है जो कभी-कभी सर्वोत्तम होता है, यानी दिमाग नींद में भी एक्टिव है, चौकन्ना है,और अपने हितों का उसे सपने में भी ख्याल है।

नींद में होने वाले अनुभव का इस्तेमाल एक उपचार पद्धति में भी किया जाता है। सपने उलझनों को तो कई बार तार्किक ढंग से सुलझा ही देते हैं। तनाव घटा कर याददाश्त में सुधार लाते हैं। इसके साथ भीतरी सतर्कता तंत्र को रिपेयर कर बचाव तंत्र की प्रैक्टिस कराते हैं।

मनोरोगियों को इसलिए सेडविटीज़ स्लीपिंग पिल्स देकर ज्यादा से ज्यादा सुलाया जाता है ताकि भीतर ही भीतर चलते रिपेयरिंग वर्क से आराम आ जाएं।

प्रसिद्ध जर्मन मनोवैज्ञानिक सिगमंड फ्रायड के अनुसार सपने में हम अपने अतृप्त वासनाओं और सैक्स रिलेटेड फैंटेसीज को तरजीह देते हैं। ज्यादातर पाश्चात्य देशों में स्वप्न का आधार मनोवैज्ञानिक माना गया है।

रोमवासियों की मान्यता है कि स्वप्न से भविष्य की घटनाओं का पता चलता है। मिस्रवासियों का मानना है कि ईश्वर अपने संदेश सपनों के जरिए भेजता है। हिन्दू धर्म के अनुसार कई बार पुनर्जन्म की बातें सपने में आती हैं। पुनर्जन्म की थ्योरी विवादास्पद है। जिसे कई लोग बिल्कुल नहीं मानते।

उपनिषद में लिखा है कि सोते समय सारी इंद्रियां सिमट कर में आ जाती हैं। मन खुले आसमान में विचरण करता है। उसी प्रकार आत्मा ब्रह्मांड में उन्मुक्त विचरण करने लगती है।

मनोवैज्ञानिक डॉक्टर सरल जैन के अनुसार ऐसा भी होता है कि आपका परम हितैषी, आपका मन आपको बीमारियों के प्रति सावधान करता है।

रीना अपने मोटापे को लेकर बेहद परेशान रहती थी लेकिन कमजोर विलपावर और लापरवाही के कारण वह उसका निदान नहीं कर पा रही थी। व्यायाम करने में उसे आलस आता और खाने-पीने की बेहद शौकीन थी। उसे हर समय टिक्की समोसे, केक पेस्ट्री और रसमलाई कुल्फी जैसी हाई कैलोरी वाली चीजें ही खाने को चाहिए थीं। इन पर उसका कंट्रोल न था।

मन ही मन वो अपने को कोसती भी रहती। एक अपराधबोध उसके मन में जैसे घर कर गया था। इसे लेकर उसे अक्सर सपने आते जिसमें वो हथिनी बन जाती। कभी-कभी सांस फूलने के कारण पिकनिक पर जहां सभी दौड़ लगा रहे होते वह एक जगह बैठी रहती।

उस पर इन सपनों का धीरे-धीरे असर हुआ। विलपावर मजबूत बन जाने पर उसने जिम जाना और खाने पीने पर नियंत्रण कर संतुलित आहार लेना शुरू कर दिया।

नरेशचंद को जब से एक बार हार्टअटैक हुआ, उसके बाद उन्हें एक बार ह्दय रोग से संबंधित सपने दिखे मानों कोई उन्हें ये याद दिला देता हो कि उन्हें अब बदपरहेजी नहीं करनी करनी है। वे सपने की बात सकारात्मक रूप में लेकर चलने लगे। वे हंसकर परिजनों को बताते 'भाई देखो एक डॉक्टर बाहर अस्पताल में है तो एक डॉक्टर मेरे भीतर भी है।'

कुछ मनोवैज्ञानिक इस बात पर जोर देते हैं कि सपने हमारी अछूती इच्छाओं को पूरा करने का माध्यम है। साहिल की यह उत्कट अभिलाषा थी कि वह पायलट बनकर सूदूर आसमान में उड़ान भरे और एक दिन सुबह जब वो उठा, अत्यंत प्रसन्न था। चहकते हुए उसने मां को बताया "मां मुझे सपना आया कि मैं पायलट बन गया हूं। दूर आकाश में जब मैंने सॉर्टी ली, तो मजा आया कि लगा जैसे मैंने सचमुच का हवाई जहाज उड़ाया हो।

सपने में कई बार बहुत ही बेतुके और अजीब गरीब कनफ्युजन वाले होते हैं। जो सुबह होने तक दिमाग से बिल्कुल साफ हो जाते हैं। वे बिलकुल याद नहीं रहते। उन पर दिमाग खपाने से कोई फायदा नहीं। सिर्फ समय की बर्बादी होगी मगर कई बार वे आपके व्यक्तित्व का आइना बन जाते हैं। इनमें लॉजिक होता है। विशफुल थिंकिंग को साकार कर रहे हैं।

सपने में देखी गई हर चीज आपके व्यक्तित्व और जीवन का प्रतिनिधित्व करती है उनका जिन्हें आप जानते हैं जिनका आपके मन पर कहीं न कहीं कोई असर है। एक चांस या मुलाकात या कोई फिल्मी हस्ती, कुछ भी हो सकता है और करीबी रिश्ते का तो बोलबाला रहता ही है।

सपने महज फैंटेसी नहीं है। वे दिन भर के अधूरे विचारों और आंतरिक सच्चाइयों का दर्पण हैं। अक्सर दिनभर के क्रियाकलाप सपने में आते हैं। अगर गृहिणी है तो जिसका संसार रसोई में ही समाया हो उसे आलू छीलने, आटा गूंथने और कुकर की सीटियों के सपने आयेंगे।

एक्जीक्यूटिव ऑफिस और मीटिंग्स संबंधी और डॉक्टर दवाई मरीज को लेकर सपने देखते हैं। कलाकार तो ताली बजती ऑडियंस मजा दे सकती है।

बायोलॉजिकली कहे तो यह माना जाता है कि सपना कुछ और नहीं बल्कि दमित भावनाएं है लेकिन साइंस क्या मन तक पहुंच पाया है। मन एक गहरी मिस्ट्री है। बहरहाल, ये तो मानी हुई बात है कि सपने आपको तनाव मुक्त करते हैं और अगर आप उनका विश्लेषण करना सीख लें तो ये बहुत मजेदार क्रिया होगी जिससे आप अपने को समझ भी पाएंगे।

कभी कभी ख़ुद से बात करो, कभी ख़ुद से बोलो
अपनी नज़र में तुम क्या हो,ले मन की तराज़ु पर तोलो
कभी कभी ख़ुद से बात करो
कभी कभी ख़ुद से बोलो

कवि प्रदीप

प्रेम और अनुमोदन

साभार : बच्चों से तालमेल कैसे बनाएं

बच्चों की खुशी और उनकी खुशहाली उन्हें दिए गए प्रेम और अनुमोदन पर निर्भर करती है। हमें बच्चों के पक्ष में होना होगा। उनके पक्ष में होने का मतलब है उन्हें प्रेम देना। मालिकाना प्रेम नहीं, भावुकता भरा प्रेम भी नहीं। बस हमारा व्यवहार ऐसा हो जिससे बच्चे को पता चले कि हम उसे प्यार करते हैं, उसका अनुमोदन करते हैं।

ऐसा करना सम्भव है। मैं दर्जनों माता-पिता को जानता हूँ जो बच्चों के पक्ष में हैं। जो बदले में कुछ नहीं चाहते और इसलिए ही बहुत कुछ पाते हैं। वे समझते हैं कि बच्चे नन्हे वयस्क नहीं होते।

जब कोई बेटा घर में चिट्ठी लिखता है- 'प्यारी माँ मुझे पचास रुपये भेजो। आशा है तुम ठीक होगी। पापा को प्यार देना।' अगर बच्चा ईमानदार हो और खुद को अभिव्यक्त करने से डरता न हो तो माँ मुस्कराती है। क्योंकि वह जानती है कि दस साल का बच्चा ऐसी ही चिटठी लिख सकता है। जो गलत तरह के माता-पिता हैं वे कहेंगे. "देखो, यह जानवर सिर्फ अपने स्वार्थ के बारे में सोच सकता है। हमेशा कुछ-न-कुछ चीज की माँग करता रहता है।"

मेरे स्कूल के अच्छे माता-पिता कभी भी अपने बच्चों का हालचाल नहीं पूछते । वे स्वयं आकर पता करते हैं। बुरे पालक हमेशा उतावले सवाल करते रहते हैं। क्या वो अब पढ़ सकता है? वो कब साफ-सुथरा रहना सीखेगा? क्या वो कक्षा में जाती है?

यह दरअसल बच्चों पर विश्वास करने की बात है। कुछ करते हैं ज्यादातर नहीं। बच्चे इस अविश्वास को तुरन्त महसूस कर लेते हैं। वो समझ जाते हैं यह सतही प्यार है अन्यथा उन पर विश्वास किया जाता। जब बच्चों का अनुमोदन किया जाता है तो उनसे किसी भी विषय पर बात की जा सकती है क्योंकि अनुमोदन संकोचों को हवा कर देता है।

लेकिन सवाल उठता है कि क्या बच्चों का अनुमोदन सम्भव है, जब हम खुदी को अनुमोदित नहीं कर पाते हैं? यदि आप अपने बारे में जागरूक नहीं हैं तो आप खुद का अनुमोदन नहीं कर सकते। दूसरे शब्दों में यह कि आप स्वयं अपने और अपनी मंशाओं के प्रति जितना सचेत होते हैं, खुद को अनुमोदित करने की सम्भावना उतनी ही ज्यादा होती है।

मेरी दिली इच्छा है कि पालक अपने और अपने बच्चों के स्वभाव के बारे में ज्यादा-से-ज्यादा ज्ञान रखें। तभी वे अपने बच्चों को मानसिक तनावों से दूर रख पाएँगे। मैं जोर देकर कहना चाहता हूँ कि पालक अपने बच्चों पर पुराने और रूढ़िवादी विचार, आचरण तथा नैतिक मूल्य जबरदस्ती लादकर उन्हें बिगाड़ रहे हैं। वे अपने बच्चों को बीते समय की वेदी पर बलि चढ़ा रहे हैं। यह खास तौर पर उन पालकों के संदर्भ में सही ठहरता है जो अपने बच्चों पर आज्ञाकारी धर्म थोपते हैं। ठीक वैसे ही जैसे कभी उन पर थोपा गया था।

मैं जानता हूँ कि अहम चीजों को त्यागना सबसे मुश्किल काम है। लेकिन इसी त्याग से ही हम जीवन, तरक्की और खुशी खोज पाते हैं। पालकों के लिए त्याग जरूरी है। उस नफरत का त्याग जो आलोचना और अधिकार का रूप धर लेती है।

उस असहनशीलता का त्याग जो भय से उपजती है। जीर्ण नैतिकी और भीड़ के निर्णयों का त्याग। सरल शब्दों में, पालकों का इन्सान बनना जरूरी है। उन्हें यह समझना चाहिए कि वो कौन हैं और कहाँ खड़े हैं। यह आसान नहीं है। क्योंकि व्यक्ति खुद ही नहीं होता । वह जितने लोगों से मिलता है उन सबका मिश्रित रूप होता है। वह उनके कई मूल्य अपना लेता है। माता-पिता अपने माता-पिता की सत्ता बच्चों पर लादते हैं क्योंकि हर पुरुष में उसका पिता और हर स्त्री में उसकी माँ बसती है। यह कठोर सत्ता ही नफरत उपजाती है और साथ लाती है समस्यात्मक बच्चे। यह बच्चों के अनुमोदन के ठीक विपरीत है।

कुछ किशोरियों ने मुझसे कहा है, "मैं अपनी माँ को खुश करने के लिए कुछ नहीं कर सकती। वह सब कुछ मुझसे बेहतर करती है। सिलाई या बुनाई में गलती हुई तो वह नाराज हो जाती है।"

बच्चों को शिक्षण की उतनी दरकार नहीं जितनी प्यार व समझ की है। उन्हें स्वाभाविक रूप से अच्छे बने रहने के लिए अनुमोदन और आजादी दरकार है। जो सच में मजबूत और स्नेही माता-पिता होते हैं, उनमें ही बच्चों को अच्छे बनने की आजादी देने की ताकत होती है।

दुनिया अति-निन्दा से त्रस्त है। दरअसल यही बात सीधे-सीधे कही जा सकती है कि दुनिया नफरत से त्रस्त है। माता-पिता की नफरत बच्चों को एक समस्या में बदल देती है। ठीक उसी तरह जैसे समाज की घृणा एक अपराधी को समस्या में बदल देती है। छुटकारा प्रेम में निहित है, पर कठिनाई यह है कि प्रेम को कोई बाध्य नहीं कर सकता।

समस्यात्मक बच्चे के माता-पिता को बैठकर खुद से ये सवाल पूछना चाहिए: क्या मैंने बच्चे को वास्तविक अनुमोदन दिया है? क्या मैंने उसमें विश्वास दर्शाया है? क्या मैंने उसके प्रति समझ जताई है? मैं सिद्धान्त नहीं बखान रहा। मैं जानता हूँ कि कोई समस्यात्मक बच्चा हमारे स्कूल में आकर एक प्रसन्न और सामान्य बच्चा बन सकता है। इस इलाज प्रक्रिया की तह में है बच्चे को अनुमोदन देना, उस पर भरोसा करना, उसे समझना।

अनुमोदन की जितनी जरूरत समस्यात्मक बच्चों को होती है उतनी ही सामान्य बच्चों को भी होती है। जिस धमदिश का पालन हरेक माता-पिता और शिक्षक को करना चाहिए वह है-तू हमेशा बच्चों के पक्ष में होगा। हम निश्चित रूप से बच्चे के पक्ष में हैं और बच्चा यह बात अवचेतन रूप से समझता है।

मैं यह नहीं कहता कि हम फरिश्तों की टोली हैं। ऐसे भी मौके आते हैं जब हम नाराज होकर चीखते-चिल्लाते हैं। अगर मैं दरवाजा रंग रहा होऊँ और रॉबर्ट आकर गीले रंग पर मिट्टी उछाल जाए तो मैं जरूर नाराज होऊँगा। और क्योंकि वह एक अर्से से हमारे साथ है, मेरी नाराजगी उसे डराएगी नहीं। पर अगर रॉबर्ट किसी घृणास्पद स्कूल से ताजा-ताजा आया हो और मिट्टी उछालना उसके लिए सत्ता से लड़ने का प्रतीक हो, तो मैं भी उसके साथ मिलकर मिट्टी उछालूँगा। क्योंकि उसका बचाव दरवाजों के बचाव से अधिक महत्त्वपूर्ण है। मैं जानता हूँ कि जब तक वह अन्दरूनी नफरत निकाल नहीं लेता मुझे उसके पक्ष में ही होना चाहिए ताकि वह फिर से दोस्ताना व्यवहार अपना सके। यह काम आसान है। मैंने एक लड़के को मेरी कीमती खरीद पर गुस्सा निकालते देखा है। पर मैं चुप रहा। क्योंकि मैं जानता था कि अगर उस समय में प्रतिवाद करता तो वह अपने पिता के रूप में देखने लगता, जो उसे हमेशा औजारों को छूने पर पिटाई की धमकी देता था।

मजे की बात यह है कि कई बार डॉटने-फटकारने के बावजूद आप बच्चे के पक्ष में हो सकते हैं। क्योंकि अगर आप उसके पक्ष में हैं तो उसे इस बात अहसास होता है। आलुओं या औजारों को लेकर छोटा-मोटा मतभेद उस मूल सम्बन्ध को नहीं तोडता। जब बच्चे के साथ व्यवहार में आप सत्ता या नैतिक सम्बन्ध लाते हों तो बच्चे यह समझ पाते हैं कि आप उसके पक्ष में हैं। क्योंकि इससे पहले की जिन्दगी में सत्ता और नैतिकता ही वे चौकीदार थे जो लगातार उसकी गतिविधियों को बाधित करते थे।

जब कोई आठ साल की बच्ची मेरे पास से यह कहते हुए गुजरती है नील बड़ा बेवकूफ है।' मैं जानता हूँ कि यह मेरे प्रति प्रेम दशने का एक नकारात्मक तरीका है। वह मुझे यह जताती है कि वह मुझे लेकर सहज है। बच्चे उतना प्यार नहीं देते, जितना वे स्वयं चाहते हैं। हरेक बच्चे के लिए बड़ों का अनुमोदन ही प्यार है और उनकी नापसन्दगी नफरत। बच्चों को यह अहसास हमेशा रहता है कि शिक्षक उनके पक्ष में हैं।

फिर भी किसी भी समाज में प्रशंसा पाने की एक स्वाभाविक इच्छा होती है। अपराधी वह व्यक्ति होता है जो समाज के अधिकांश लोगों की प्रशंसा पाने की इच्छा को खो देता है। या फिर उसे उसकी उलट दिशा में बदलने पर बाध्य हो जाता है-यानी समाज के प्रति तिरस्कार। अपराधी हमेशा एक नम्बर का अहंकारी होता है। मैं रातों-रात अमीर बनना चाहता हूँ और दुनिया जाए भाड़ में। जेल की सजा उसके अहम् के लिए बस्तर का काम करती है। वह इससे अकेला पड़ जाता है। खुद के बारे में, बेरहम समाज के बारे में सोचता है, जिसने उसे सजा दी है। सजाएँ और बन्दीगृह किसी अपराधी को नहीं सुधार सकते हैं क्योंकि वे उसके लिए समाज की नफरत का सबूत हैं। समाज वे मौके ही समाप्त कर देता है जिनके जरिए वह फिर से सामाजिक बन सके, दूसरों की प्रशंसा पा सके। कैद करने की यह पागल व अमानवीय व्यवस्था ही निरर्थक है क्योंकि वह बन्दी की मानसिकता को छू तक नहीं पाती।

इसलिए मैं कहता हूँ कि किसी भी सुधारक स्कूल में पहली जरूरत है सामाजिक अनुमोदन पाने का अवसर। जब तक बच्चों को निरीक्षक को सलाम ठोकना होगा, सेना जैसी कतारों में खड़े रहना होगा, सुपरिण्टेंडेंट के कमरे में घुसते ही उछलकर खड़े होना होगा, तब तक वास्तविक आजादी नहीं होगी। अर्थात् सामाजिक अनुमोदन पाने का अवसर भी नहीं होगा। होमर लेन ने पाया था कि जब भी कोई नया लड़का लिटिल कॉमनवैल्य में आता तो वह दूसरों की प्रशंसा पाने के लिए उन्हीं तकनीकों को काम में लाता जो वह अपनी बस्ती की गलियों में इस्तेमाल करता रहा था। वह अपने कारनामों की डींगें हॉकता, दुकानों से वह किस सफाई से चीजें उड़ाता यह बताता, पुलिस को कैसे चकमा देता था इसकी गाथाएँ सुनाता। पर जब उसे पता लगता कि युवक प्रशंसा पाने के इस तरीके से उबर चुके हैं, तो वह हतप्रभ रह जाता। वह अपने नए साथियों को 'जनानियाँ' कहकर कमतर सिद्ध करने की कोशिश करता। पर क्रमशः प्रशंसा पाने की स्वाभाविक वृत्ति उसे साथियों की प्रशंसा पाने पर बाध्य करती और तब लेन द्वारा व्यक्तिगत मनोविश्लेषण के बिना ही वह खुद को अपने नए साथियों के अनुरूप ढालने लगता। चन्द महीनों में वह एक सामाजिक जीव बन चुका होता था।

साधारण, शालीन, संवेदनशील पति को भी मैं सम्बोधित करना चाहता हूँ जो हर शाम साढ़े पाँच की ट्रेन से घर लौटता है।

मैं तुम्हें जानता हूँ जॉन ब्राउन। मैं जानता हूँ कि तुम अपने बच्चों से प्यार करना चाहते हो, बच्चों का प्यार चाहते हो। जब रात दो बजे तुम्हारा पाँच साल का नन्हा अकारण ही रो-रोकर जगा देता है. तो उस पल तुम्हारे मन में खास प्रेम नहीं उमड़ता। पर याद रखना कि उसके रोने का कोई कारण जरूर है चाहे वह कारण तुम्हें उस वक्त पता न चले। अगर तुम्हें गुस्सा आ रहा है. तो कोशिश करो कि तुम उसे न जताओ। पुरूष की आवाज बच्चे के लिए स्त्री की आवाज तुलना में ज्यादा डरावनी होती है। तुम जान भी नहीं सकोगे कि गलत समय उठी एक नाराज आवाज शिशु के मन में ताउम्र के लिए कौन-से भय बसा जाएगी । माता-पिता को दिए गए निर्देशों वाला पैम्फ्लेट कहता है, "बच्चे को बिस्तर में साथ लेकर मत सोओ।" इस निर्देश को भूल जाओ । नन्हे को जितना चिपका दुलार सको दुलार करो। दूसरों के सामने प्रदर्शन के लिए अपने बच्चे का इस्तेमाल मत करो। उसकी प्रशंसा और अलोचना दोनों में सावधानी बरतो। उसकी मौजूगी में उसका गुणगान सही नहीं है। जी हाँ, केटी बढ़िया कर रही है। पिछली बार अपनी कक्षा में अव्वल रही थी। बड़ी चतुर है, हमारी केटी। कहने का मतलब या अपनी बच्चे की तारीफ ही नहीं करनी चाहिए। बच्चे से जरूर कहें तुमने जो पतंग बनाई, वह बहुत बढ़िया है। पर किसी मेहमान के सामने कुछ सिद्ध करने के लिए की गई प्रशंसा गलत है। जब हर ओर प्रशंसा तैरती है तो बत्तखें भी खुद को हंस मानने लगती हैं। बच्चा खुद के बारे में अवास्तविक बन जाता है। सच्चाई से दूर भागने में, बच्चे की मदद मत करो। दूसरी ओर अगर बच्चा फेल होता है, तो यह बात बार-बार दोहराकर उसे जलील मत करो। स्कूल की रिपोर्ट में नम्बर कम हों तो उसे मत फटकारें और अगर आपका बिली पिटकर रोता हुआ लौटे तो उसे नामर्द मत कहो।

अगर तुम यह कहते हो, जब मैं छोटा था... तो तुम एक भारी गलती कर रहे हो। संक्षेप में तुम्हें अपने बच्चे को वह जैसा है, उसी रूप में स्वीकारना है। उसे अपना प्रतिविम्ब बनाने की कोशिश बेकार है।

घर और जीन में मेरा एक ही उसूल है। वह यह कि ईश्वर के लिए दूसरों को उनकी जिन्दगी जीने दो। यह दृष्टिकोण हरेक स्थिति में अपनाना जरूरी है। यही अकेला नजरिया है जो सहिष्णुता पनपाता है। आश्चर्य है कि इससे पहले मुझे सहिष्णुता शब्द नहीं सूझा था। एक मुक्त शाला के लिए यह शब्द बिल्कुल सही है। हम बच्चों के प्रति सहनशीलता जताकर उन्हें सहिष्णु बना रहे हैं।

समय प्रबंधन

साभार : हिन्दी अनुभाग कोष

आज की इस भाग दौड़ भरी जिन्दगी को देखकर लगता है कि हमरे पास समय की कमी हो गई है। हम सोचते रहते हैं कि काश मेरे पास थोडा और समय होता तो तेहम यह भी कर लेते और वह भी। हम यह सोचते हैं कि समय के आभाव में हम सभी कार्य समय पर पूरे नहीं कर पाते। इसी प्रकार हम अन्य लोगों से भी अक्सर यह सुनते हैं कि हम करना तो बहुत कुछ चाहते हैं पर समय ही नहीं मिलता।

हमारे सामने आज सबसे बडी समस्या और चुनौती है समय का सही प्रबंध न कर पाना जिसके कारण हमें कई बार हमारी मेहनत के अनुरूप परिणाम प्राप्त नहीं होता और हमारे कदम निराशावाद की ओर बढ़ जाते हैं। इसके लिए आवश्यकता है समय प्रबंधन की। आपको यहां केवल यह याद रखना होगा कि हमारे पास भी हर दिन उतने ही घण्टे होते हैं जितने महात्मा गांधी, सरदार पटेल, आइंस्टाइन, मदर टेरेसा, ए.पी.जे.अब्दुल कलाम के पास थे या आज अमिताभ बच्चन या बिल क्लिंटन के पास हैं। अब विचार करें कि जब सभी को दिन भर में 24 घण्टे मिलते हैं तो कोई उसमें अपने अधिकतम कार्य पूरा करता है तो कोई नहीं। ऐसा क्यों ? यह पूर्णत स्पष्ट है कि जो समय का अधिकतम सदुपयोग नहीं करता, वह आज की इस भागती जिंदगी में पीछे छूट जाता है ! इसलिए साथियों जिन्दगी में अगर आगे बढना है तो इसके लिए सबसे अधिक आवश्यकता है समय प्रबंधन की। इसके लिए सबसे पहले आपको अपने लक्ष्य निर्धारित करते हुए एक निश्चित समय में ही उसे प्राप्त करने की कोशिश करनी होगी। उसके बाद अपने कार्यों की प्राथमिकताओं को निर्धारित करें। हमारे जीवन के लक्ष्य, हमारे जीवन के हर मोड के साथ हमारी प्राथमिताओं को भी बदलते रहते हैं। इसलिएं आवश्यक है कि ऐसी एक सूची बनाये जिसमें महत्वपूर्ण काम पहले व कम महत्व के कामों को बाद किया जाना सुनिश्चित हो। इसका विशेष ध्यान रखें कि आपकी निगाह परिणाम पर हो समय कि व्यस्तता पर नहीं। मैं आपको बताना चाहती हूं कि गीता का सार भी हमें बहुत कुछ बताता है जैसे कर्म किये जा फल की इच्छा मत कर ऐ इंसान क्योंकि हर व्यक्ति को अपने कर्म के अनुसार ही फल मिलेगा। बिना कार्य खाली बैठना केवल थकान को बढाता है जिससे हमारा शरीर और भी सुस्त हो जाता है। जैसे एकांत कारावास। व्यक्ति अधिकतर अपना समय बेकार के कार्यो में बिता देता है और सोचता है कि समय की कमी के कारण वह अपने कई कार्य नहीं कर सके। परन्तु वास्तव में देखा जाए तो ऐसा होता नहीं है क्योंकि यहां भी वही समय प्रबंधन की कमी पाई जाती है जिसकी हमें नितांत आवश्यकता होती है।

हमें अपना कोई भी कार्य समयानुसार पूरा करने के लिए पहले उचित समय प्रबंधन व योजना बनानी होगी और जहां तक संभव हो सके अधिक एकाग्रता के साथ कार्य करने का प्रयास करना होगा। गीता की एक और श्रेष्ठ शिक्षा है - सकारात्मक दष्टिकोण और यही सकारात्मक दष्टिकोण हमें कार्य में आने वाली किसी भी प्रकार की बाधाओं से लडने के लिए शक्ति प्रदान करता है और हमारी सफलता की पहली सीढी यही सकारात्मक दष्टिकोण है। अब मैं आपको एक छोटी सी कहानी द्वारा सकारात्मक दष्टिकोण के बारे में बताती हूं। एक गांव में दो साधु एक ही झोंपड़ी में रहते थे, जो दिन भी भीख मांगते और मंदिर में पूजा करते। एक दिन बहुत तेज आंधी-तूफान व बारिश हुई। शाम को जब दोनों वापस आए तो उन्होंने देखा कि आंधी-तूफान के कारण उनकी झोंपड़ी आधी टूट गई है। यह देखकर पहला साधु बहुत क्रोधित हुआ और बोला 'भगवान तू मेरे साथ हमेशा ही गलत करता है, मैं दिन भर तेरा नाम लेता हूं, पूजा करता हूं फिर भी तूने मेरी झोंपड़ी तोड दी। गांव में चोर-लुटेरे, झूठे लोगों के मकानों को तो कुछ नहीं हुआ। हम बिचारे गरीब साधुओं की झोंपड़ी तोड़ दी। तू हमसे प्रेम नहीं करता। तभी दूसरा साधु आया और झोंपड़ी को देखकर खुश होता हुआ नाचने लगा और कहता है कि भगवान विश्वास हो गया कि तू हमसे कितना प्रेम करता है नहीं तो इतने आंधी-तूफान, बारिश से हमारी पूरी झोंपड़ी उड़ जाती। ये तेरी ही कृपा है कि हमारे पास सिर ढकने को जगह है। निश्चित ही मेरी पूजा का फल है। मेरा तुझ पर विश्वास और बढ़ गया है। तो यही है सकारात्मक सोच।

मित्रों एक ही घटना एक ही जैसे दो लोगों ने कितने अलग-अलग ढंग से देखी। अत: हमारी सोच पहले वाले साधू की तरह होगी तो हमें हर चीज में कमी नजर आएगी और यदि दूसरे साधू की तरह होगी तो हमें हर चीज में अच्छाई नजर आएगी। अत: हमें विकट से विकट परिस्थितियों में भी अपनी सोच सकारात्मक ही बनाई रखनी चाहिए।

हमें समय प्रबंधन और सकारात्मक सोच दोनों का संयुक्त रूप से प्रयोग करते हुए अपने कार्यों को करना होगा। हमेशा यही कहिए कि हां मैं यह काम कर सकता हूं। यह हां बिना किसी शर्त के होनी चाहिए क्योंकि नहीं का अर्थ है संघर्षमय जीवन और हर व्यक्ति के विरूद्ध जंग। अपना कार्य सदैव सकारात्मक सोच व खुले दिमाग से कीजिए। हमें जो भी काम सौंपा जाएं उसे बिना किसी डर के पूरी एकाग्रता व इच्छा से पूरा करें। दूसरों की गलतियों को नजरंदाज करते हुए अपना कार्य करते रहें और केवल उनके सकारात्मक योगदान पर ही ध्यान दें। हमें फल की इच्छा रखे बगैर अपने ज्ञान और क्षमता के अनुसार श्रेष्ठतम कार्य करना चाहिए। कार्य करना हमारे हाथ में है और फल हमें प्राकतिक विधान के अनुसार स्वयं मिलेगा। किसी भी कार्य को करते समय समस्याएं तो आती हैं परन्तु अच्छी और उपयोगी योजनाओं की कीमत समस्या को जल्दी पहचानने और उसका हल खोजने से आंकी जाती हैं। क्योंकि हम इसे माप भी सकते हैं और नियंत्रित भी कर सकते हैं। यह एक अतुलनीय सच्चाई है कि समय प्रबंधन के साथ जीवन में सफलता की सीढियां चढ़ना नामुमकिन नहीं। किसी ने सही कहा है 'समय' न लगाओ यह तय करने में कि हमें करना क्या है वरना 'समय' तय कर लेगा कि हमारा क्या करना है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि आप किसी भी कार्य को नीचे दिये गए सुझावों पर अमल करते हुए करोगे तो पाओगे कि आपके पास समय की कमी नहीं :-

- कार्य एकाग्रचित होकर करें।
- सकारात्मक दष्टिकोण रखें।
- अपनी कार्य योजना की प्रतिदिन समीक्षा करें।
- कार्य समय में वद्धि करें।
- कार्य करने के लिए अपनी प्राथमिकताएं तय करें।
- अपना लक्ष्य निर्धारित करें और उस लक्ष्य को निर्धारित समय में ही प्राप्त करने का हर संभव प्रयास करें।
- जीवन के बारे में अपना नजरिया स्पष्ट रखें।
- सीखने से कभी भी किसी प्रकार का परहेज न करें।
- आप अपने आप से क्या चाहते हैं इसका आपको स्पष्ट रूप से पता हो ताकि आप उसी के अनुसार समय प्रबंधन कर सकें।
- रात को विश्राम करने से पहले अपने दिन भर किये गए सारे कार्यों पर एक बार अवश्य विचार करें। जहां कहीं भी कमी रह गई है, उस पर ध्यान दें और अगले ही दिन उसे पूरा करने का प्रयास करें ताकि आपके अन्य सभी कार्य सही प्रकार से आगे बढते रहें।
- अनुशासन का पालन करें और सब चलता है, वाला रवैया छोड दें।

वैश्वीकरण के इस युग में टिके रहने का सिर्फ एक ही रास्ता है आगे बढते रहना जिसके लिए जरूरी है कि हमें अपनी मंजिल का पता हो और राह में आने वाली कठिनाइयों का जिसका समाधान समय पर किया जा सके। ऐसे में समय प्रबंधन ही हमें आगे बढने में सहायक हो सकता है। इस बात को भी हमें हमेशा ध्यान रखना होगा कि जिन्दगी में सब कुछ हमारे हिसाब से नहीं होता और विपरित स्थितियों का सामना हम अपने जीवन में अक्सर करते हैं। अपने ऊपर विश्वास रखते हुए ऐसी स्थिति आने पर न तो घबराना चाहिए और न ही अनावश्यक तनाव को अपने ऊपर हावी होने देना चाहिए क्योंकि अनावश्यक तनाव आपको आपके लक्ष्यों से भटका सकता है। आप सिर्फ धैर्यपूर्वक स्थिति का सामना कीजिए और देखिये कि आप कितनी जल्दी सफलता के करीब पहुंच जाते हैं। अब तक आप समझ ही चुके होंगे कि हमारी जिन्दगी में समय प्रबंधन की क्या अहमियत है। समय बहुत मूल्यवान है और अब यह हमारे हाथ में है कि हम समय का उपयोग कैसे करते हैं। यह तो आपने सुना ही होगा कि गया वक्त फिर हाथ नहीं आता तो समय के जाने से पहले इसका प्रबंधन इस प्रकार करो कि इसकी कमी ही न खले। तो इंतजार किस बात का आज से ही अपने जीवन में समय प्रबंधन से अपनी जिन्दगी को व्यवस्थित कीजिए।

गुरूग्राम नराकास बैठक की झलकियाँ

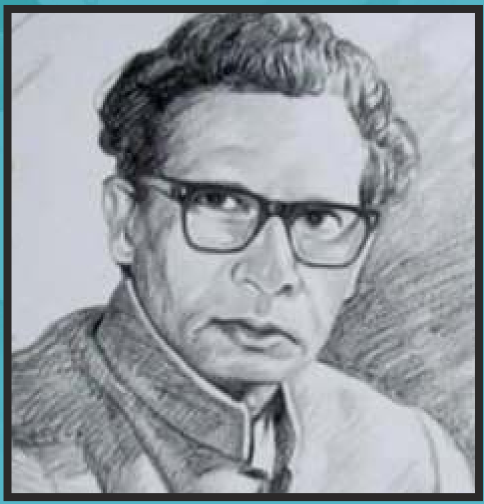

हरिवंश राय बच्चन

इसीलिए खड़ा रहा कि तुम मुझे पुकार लो

जमीन है न बोलती न आसमान बोलता,
जहान देखकर मुझे नहीं जबान खोलता,
नहीं जगह कहीं जहाँ अजनबी गिना गया,
कहा-कहा न फिर चुका दिमाग-दिल टटोलता,
कहाँ मनुष्य है कि जो उमीद छोड़कर जिया,
इसीलिए अड़ा रहा कि तुम मुझे पुकार लो।

ऊजाड़ से लगा चुका उमीद मैं बहार की,
निदाघ से उमीद की,
बसंत के बयार की,
मरूस्थली मरीचिका सुधामयी मुझे लगी,
अंगार से लगा चुका उमीद मैं तुषार की,
कहाँ मनुष्य है जिसे न भूल शूल-सी गड़ी,
इसीलिए खड़ा रहा कि भूल तुम सुधार लो।

वाप्कोस लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
जल शक्ति मंत्रालय
(A Government of India Undertaking)
Ministry of Jal Shakti
आईएसओ 9001:2015

पंजीकृत कार्यालय : 5वां तल, ''कैलाश'', 26, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली - 110 001
दूरभाष: +91-11-23313131, 23313881, फैक्स: +91-11-23313134, 23314924, ई-मेल: ho@wapcos.co.in

निगमित कार्यालय: 76-सी, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर-18, गुरूग्राम-122015, हरियाणा
दूरभाष: +91-124-2399428, फैक्स: +91-124-2397392, ई-मेल: mail@wapcos.co.in
ई-मेल: hindi@wapcos.co.in, वेबसाइट : http://www.wapcos.co.in